25/-₹

हिन्दी साप्ताहिक

विश्वकर्मा किरण

वर्ष-20 अंक-40 जौनपुर 28 अक्टूबर, 2019 http://www.vishwakarmakiran.com

आपके पसीने के बदले हम खून बहाने को तैयार

बक्सर के सम्मेलन में इन्द्रजीत सिंह

विश्वकर्मा समाज की पहचान बचाना हम सबकी जिम्मेदारी

डाल्टनगंज के विश्वकर्मा महासम्मेलन में रामआसरे विश्वकर्मा

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

हंसराज विश्वकर्मा

जिलाध्यक्ष भाजपा

जनपद-वाराणसी (प्रधानमन्त्री संसदीय क्षेत्र)

मो0: 9415682815

दीपावली की

हार्दिक शुभकामनाएं

श्याम जी विश्वकर्मा

प्रदेश सचिव

अ0भा0 विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा

मो0: 9454003721

दीपावली की

हार्दिक शुभकामनाएं

रमेश चन्द्र विश्वकर्मा

निजी सचिव

उ0प्र0 सचिवालय, लखनऊ

मो0: 9454410187

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

इं0 अखिलेश विश्वकर्मा

सेन्ट्रल वाइस प्रेसिडेन्ट

इण्डियन रेलवे टेक्निकल

सुपरवाइजर एसोसिएशन

मो0: 9794830638

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

महेन्द्र विश्वकर्मा

प्रदेश अध्यक्ष

विश्वकर्मा महासभा, उत्तर प्रदेश

संयोजक- नमामि गंगे (भाजपा) लखनऊ

मो0: 7355607921

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

अशोक कुमार शर्मा

मैनेजर

खादी ग्रामोद्योग आयोग

आगरा मण्डल, आगरा

मो0: 9452235355

R.N.I. No.- UPHIN/2000/01157
विश्वकर्मा किरण
हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका

वर्ष-20 अंक-40
जौनपुर, 28 अक्टूबर, 2019
पृष्ठः 32 मूल्यः 25/- रूपया

प्रेरक
रघबीर सिंह जांगड़ा
मो0: 9416332222
*****
सम्पादक
कमलेश प्रताप विश्वकर्मा
मो0: 9454619328
*****
सह सम्पादक
विजय कुमार विश्वकर्मा
E-mail: sharmavijay86@gmail.com
*****
सह सम्पादक
धीरज विश्वकर्मा
मो0: 9795164872
*****
समन्वय सम्पादक
शिवलाल सुथार
मो0: 8424846141
*****
मुम्बई ब्यूरो
इन्द्रकुमार विश्वकर्मा
मो0: 9892932429
*****
जौनपुर ब्यूरो
संजय विश्वकर्मा
मो0: 9415273179

-:सम्पर्क एवं प्रसार कार्यालयः-
डिजिटल प्वाइंट, कैपिटल बिल्डिंग
(भाजपा कार्यालय के सामने)
त्रिलोकनाथ रोड, हजरतगंज
लखनऊ। 226001

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक कमलेश प्रताप विश्वकर्मा द्वारा अजन्ता प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, अहमद काम्प्लेक्स, गुईन रोड, अमीनाबाद, लखनऊ से मुद्रित एवं 98, नारायण निवास, नखास, सदर, जौनपुर से प्रकाशित।
सम्पादक- कमलेश प्रताप विश्वकर्मा

website: www.vishwakarmakiran.com
E-mail: news@vishwakarmakiran.com

-:मुख्य संरक्षकः-
विश्वकर्मा जागरूकता मिशन

सम्पादकीय...

वाइब्रेन्ट ग्लोबल गर्ल पायल जांगिड़

कमलेश प्रताप विश्वकर्मा

राजस्थान की 17 वर्षीय पायल जांगिड़ भारत की इकलौती महिला है जिसे अमेरिका के न्यूयार्क में ग्लोबल गोलकीपर अवार्ड से सम्मानित किया गया है। वह भी उस मंच पर जहां दुनिया के सबसे लोकप्रिय शख्सियत भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी को भी वही अवार्ड प्रदान किया गया।

बिल एण्ड मिलिन्डा गेट्स फाउण्डेशन द्वारा आयोजित अवार्ड समारोह में भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी को अवार्ड देने के बाद ज्यों ही पायल जांगिड़ का नाम पुकारा गया, दुनिया की निगाहें उस पर टिक गई। एक 17 वर्षीय लड़की को इतना बड़ा अवार्ड आखिर किसलिये? मीडिया के लोगों ने न्यूयार्क से लेकर पायल के गांव हींसला (जिला अलवर) तक दौड़ लगाई। पता चला कि पायल ने बाल विवाह और बाल श्रम के विरूद्ध अनोखे कार्य किये हैं। बचपन बचाओ आन्दोलन से जुड़ी पायल जांगिड़ अब ''वाइब्रेन्ट ग्लोबल गर्ल'' बन चुकी है।

विश्वकर्मा वंश की बेटी पायल जांगिड़ ने पूरे देश के विश्वकर्मावंशियों का नाम रोशन किया है। वर्ष 2015 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा और उनकी पत्नी मिशेल ओबामा जब भारत आये थे तब भी पायल एक बार खूब चर्चा में आई थी। नोबेल पुरस्कार प्राप्त कैलाश सत्यार्थी के साथ पायल को भी बराक ओबामा व मिशेल ओबामा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। पायल के वाक्यों से मिशेल ओबामा इतना प्रभावित हुई थी कि उन्होंने पायल को भींचकर गले लगा लिया था।

पायल जांगिड़ अब दुनिया के लिये जाना-पहचाना नाम हो गया है। उसने जो कार्य अपने गांव हींसला (राजस्थान) में किया है, वही कार्य पूरी दुनिया में करने का इरादा जता दिया है। गांव लौटने के बाद लोगों ने उसका जबरदस्त तरीके से स्वागत किया। जिलाधिकारी अलवर के साथ ही तमाम संगठनों द्वारा पायल जांगिड़ के स्वागत का क्रम जारी है।

पीएम मोदी के साथ ही पायल जांगिड़ को भी मिला 'ग्लोबल गोलकीपर अवार्ड'

रिपोर्ट- मनोज कुमार शर्मा, जयपुर

वर्ष 2015 में भारत आये तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा व उनकी पत्नी मिशेल ओबामा से मिल चुकी है पायल जांगिड़

जयपुर। राजस्थान की पायल जांगिड़ को अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में बिल एण्ड मिलिंडा गेट्स फाउण्डेशन की ओर से 'ग्लोबल गोलकीपर अवार्ड' से सम्मानित किया गया है। पायल जांगिड़ को यह अवार्ड प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के चेंजमेकर अवार्ड के साथ ही प्रदान किया गया है। पायल जांगिड़ को यह अवार्ड बाल विवाह तथा बाल श्रम जैसी कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाने के फलस्वरूप प्रदान किया गया है। पायल जांगिड़ ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ एक मुहिम बनाकर राजस्थान प्रदेश में काफी जिलों में ऐसी कुरीतियों को खत्म करने के लिए काम किया है। अब वह दुनियाभर में इस मुहिम को चलाना चाहती हैं।

उल्लेखनीय है कि बचपन बचाओ आंदोलन के प्रणेता व नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के साथ अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में बिल एण्ड मिलिंडा गेट्स फाउण्डेशन की ओर से आयोजित कार्यक्रम में पायल ने यह पुरस्कार ग्रहण किया। पायल ने 'ग्लोबल गोलकीपर अवार्ड' प्राप्त करने वाली पहली भारतीय महिला होने का भी गौरव प्राप्त किया है। पायल जांगिड़ को यह सम्मान मिलने पर पूरे देश के विश्वकर्मावंशियो में हर्ष का माहौल है।

इससे पूर्व भी नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के साथ पायल जांगिड़, अमेरिका के राष्ट्रपति रहने के दौरान बराक ओबामा से मिल चुकी है। वर्ष 2015 में गणतंत्र दिवस में सम्मिलित होने भारत आये बराक ओबामा व उनकी पत्नी मिशेल ओबामा ने पायल जांगिड़ की बहुत सराहना की थी। यहां तक कि मिशेल ओबामा पायल से प्रभावित हो गले लगा लिया था। बराक ओबामा से पायल जांगिड़ की मुलाकात के सम्बन्ध में 'विश्वकर्मा किरण' पत्रिका ने अपने 28 मार्च 2015 के अंक में विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित की थी।

पायल जांगिड़ को बहुत-बहुत बधाई व शुभकामनाएं।

पायल जांगिड़ और उनका योगदान

पायल जांगिड़ को बिल एण्ड मिलिंडा गेट्स फाउण्डेशन की तरफ से चेंजमेकर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। पायल को यह सम्मान राजस्थान में बाल श्रम और बाल विवाह को समाप्त करने के उनके अभियान के लिए दिया गया है। इस अवॉर्ड से सम्मानित करने के बाद संस्था की तरफ से एक ट्वीट किया गया। लिखा था, 'जांगिड़ को गोलकीपर्स ग्लोबल गोल्स अवॉर्ड्स में चेंजमेकर अवॉर्ड मिला। ये पुरस्कार बाल श्रम और बाल विवाह को समाप्त करने के पायल के अभियान को मान्यता प्रदान करता है।'

राजस्थान की रहने वाली हैं पायल जांगिड़–

पायल जांगिड़ की उम्र केवल 17 साल है। वह राजस्थान के अलवर जिला के हींसला गांव की निवासी हैं। पायल की कम उम्र में उनके परिवार ने भी उन पर शादी करने का दबाव बनाया लेकिन पायल ने परिवार के दवाब में ना आकर स्कूल जाने का फैसला किया। पायल जांगिड़ ने अपने गांव में बाल मित्र ग्राम कार्यक्रम के तहत गठित बाल परिषद् में बाल पंचायत प्रमुख के तौर पर काम किया। यह कार्यक्रम, नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के बचपन बचाओ आन्दोलन के तहत आता है।

कैलाश सत्यार्थी ने की प्रयास की सराहना–

कैलाश सत्यार्थी ने अपने एक लेख में पायल जांगिड़ के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा था कि 'पायल बाल श्रम, बाल विवाह और घूंघट प्रथा का विरोध करने में सबसे आगे रहीं हैं।' बता दें कि पायल ने बच्चों के अधिकार और उनकी शिक्षा के लिए काम करने वाली संस्था 'द वल्डर्स चिल्ड्रन प्राइज' के लिए जूरी सदस्य के रूप में भी काम किया है।

अवॉर्ड मिलने पर पायल ने जताई खुशी–

अपने अभियान के बारे में बताते हुए पायल कहती हैं कि हम बच्चों के घर जाते हैं और उनके माता-पिता को समझाते हैं कि शिक्षा का क्या महत्व है और स्कूल जाना क्यों जरूरी है? मैं बच्चों के पिता से कहती हूं कि वे कभी भी अपने बच्चों या पत्नी को मारें-पीटें नहीं, बल्कि उन्हें प्यार दें। अगर वे अपने परिवार से प्यार करेंगे तो सारी चीजें बेहतर हो जाएंगी। पुरस्कार मिलने पर पायल जांगिड़ ने कहा कि मैं काफी खुश हूं कि मुझे यह अवॉर्ड मिला।

मेरी इच्छा है कि जिस तरह से मैंने अपने गांव में इन समस्याओं को खत्म किया है, चाहती हूं कि वैश्विक स्तर पर भी इन समस्याओं के खिलाफ अभियान चलाऊं। पायल जांगिड़ ने ग्लोबल गोलकीपर्स अवॉर्ड से सम्मानित किए जाने पर प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी को बधाई दी है।

आपके पसीने के बदले मैं खून बहाने को तैयार– इन्द्रजीत सिंह

बक्सर। 22 अक्टूबर 2019 को बिहार के बक्सर जिला के किला मैदान में आयोजित अखिल भारतीय बढ़ई महासभा के प्रान्तीय चेतना सम्मेलन में अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासभा के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष इन्द्रजीत सिंह ने कहा कि समाज के

लोगों के पसीने के बदले वह खून बहाने को तैयार हैं। बतौर मुख्य अतिथि पधारे पूर्व राष्ट्रपति स्व0 ज्ञानी जैल सिंह के पौत्र इन्द्रजीत सिंह ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये कहा कि वह समाज के लिये हमेसा समर्पित हैं। वह ज्ञानी जी की पुण्यतिथि 25 दिसम्बर के अवसर पर दिल्ली में विशाल कार्यक्रम आयोजित करने जा रहे हैं, समाज के लोग भारी संख्या में वहां पहुंचकर अपनी ताकत का एहसास करायें।

इस सम्मेलन का उद्घाटन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष विश्राम शर्मा ने किया। अध्यक्षता ओंकार शर्मा ने किया। अति विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व विधायक गौतम सागर राणा, भोजपुरी सम्राट भरत शर्मा व्यास थे। यह कार्यक्रम ओंकार शर्मा जिला अध्यक्ष बक्सर व जिला सचिव मन्ना शर्मा व उनकी कमेटी के लोगों के अथक प्रयास से आयोजित किया गया।

इस सम्मेलन में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, राजस्थान, उत्तराखण्ड, हरियाणा व गुजरात आदि राज्यों से भी बढ़ई समाज के पदाधिकारी व प्रतिनिधि सम्मिलित हुये। सम्मेलन के माध्यम से महासभा ने एक समाज-एक आवाज का संदेश दिया। वक्ताओं ने कहा कि बढ़ई समाज अभी तक लंच-मंच की व्यवस्था तक ही सीमित रहा है। अब यह समाज जिसकी जितनी संख्या भारी, उतनी हिस्सेदारी पर काम करेगा। संख्या हमारी, नेतृत्व दूसरे का अब ये नहीं चलेगा। अब मंच भी हमारा और नेता भी हमारा हओगा। हम किसी के बहकावे में नहीं आयेंगे।

इस इस सम्मेलन में वक्ताओं ने कहा कि आज इस मंच के माध्यम से मैं उन सभी संस्था प्रमुखों से निवेदन करता हूं कि आईए पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के पौत्र इन्द्रजीत सिंह के नेतृत्व में पूरा विश्वकर्मा समाज एक हो जाए और उनके नेतृत्व में चलने का प्रयास करें। अखिल भारतीय बढ़ई महासभा

पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह की पुण्यतिथि 25 दिसम्बर को दिल्ली में होगा विशाल कार्यक्रम।

इन्द्रजीत सिंह जी के साथ है।

महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने मंच के माध्यम से मांग किया कि ज्ञानी जैल जैल सिंह को 'भारतरत्न' दिया जाय। प्रदेश अध्यक्ष मदन शर्मा ने कहा कि मनुष्य का धर्म बदल सकता है, जाति नहीं बदल सकती। इसलिये पहले जाति को मजबूत करिये। जब घर मजबूत होगा तब बाहर भी मजबूती दिखेगी।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये पूर्व विधायक गौतम सागर राणा ने कहा कि जाति की मजबूती के बाद जमात की तरफ बढ़ना होगा। इस सम्मेलन को राष्ट्रीय संरक्षक ईश्वर दत्त शर्मा, उत्तर प्रदेश के प्रदेश उपाध्यक्ष मइयादीन पंचाल, हरिमोहन पंचाल, बिहार प्रदेश के महासचिव विक्रम शर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कप्तान राजेंद्र शर्मा, बिंदेश्वरी शर्मा, गौरी शंकर शर्मा, इंजीनियर श्याम लाल शर्मा, भोजपुरी सम्राट भरत शर्मा व्यास, बक्सर के जिला सचिव मुन्ना शर्मा, राष्ट्रीय महासचिव दिवाकर शर्मा, झारखण्ड प्रदेश प्रभारी दीपक शर्मा, सतीश राणा, अभिनेत्री सुश्री उजाला विश्वकर्मा, दिलीप शर्मा ने भी सम्बोधित किया।

सम्मेलन में विभिन्न राज्यों से पधारे अतिथियों को जिला बक्सर कमेटी द्वारा अंगवस्त्र व पुष्पगुच्छ देकर भव्य स्वागत किया गया। सम्मेलन के बाद विशाल भण्डारे का भी आयोजन किया गया जिसमें दूर-दूर से आए हुये लोगों ने सामूहिक रूप से भोजन करके जिला कमेटी के अथक प्रयास और मेहनत की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

रजि० नं०: 2689

ॐ कंचन काया

Yoga Naturopathy & Acupressure Center

ॐ कंचनकाया चिकित्सा एवं प्रशिक्षण केन्द्र में प्राकृतिक चिकित्सा, योग चिकित्सा एवं एक्यूप्रेशर द्वारा शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों का समाधान तथा योग प्राकृतिक चिकित्सा एवं एक्यूप्रेशर द्वारा चिकित्सा का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

योग अभ्यास की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप अभ्यास की सुविधा :-

- व्यक्तिगत योगाभ्यास की सुविधा।
- आवास पर योग प्रशिक्षण।
- केन्द्र पर योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा की सेवा।
- शारीरिक व्याधि जैसे मधुमेह, मोटापा, जोड़ों का दर्द, कब्ज, उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप, महिलाओं की मासिक धर्म से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान।

मानसिक व्याधि जैसे- अवसाद, अनिद्रा, अतिनिद्रा इत्यादि।

डा० पूनम शर्मा, प्राकृतिक चिकित्सक एवं योग विशेषज्ञ

18/357, Indira Nagar
Lucknow
Mob.- 7355206306

विश्वकर्मा समाज की पहचान बचाना हम सबकी जिम्मेदारी– रामआसरे विश्वकर्मा

शिव प्रकाश विश्वकर्मा

डाल्टनगंज। अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्वमन्त्री रामआसरे विश्वकर्मा ने कहा कि कुछ ताकतें विश्वकर्मा समाज की पहचान मिटाने पर आमादा हैं। आज विश्वकर्मा समाज की पूरे देश में उपेक्षा हो रही है। सभी विश्वकर्मा बन्धुओं को मिलकर संघर्ष करना होगा और अपना अस्तित्व बचाना होगा। श्री विश्वकर्मा झारखण्ड विश्वकर्मा समाज पलामू द्वारा डाल्टनगंज टाउनहाल में आयोजित विश्वकर्मा महासम्मेलन में बोल रहे थे। पूर्वमन्त्री ने कहा कि भगवान विश्वकर्मा ही हमारे आराध्य देव हैं और इन्हीं से

हमारी पहचान हैं। भगवान विश्वकर्मा की पूजा हमारे गौरव और सम्मान से जुड़ा है।

पूर्वमन्त्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश में सपा सरकार के दौरान विश्वकर्मा पूजा की सरकारी छुट्टी घोषित करायी थी जिसे मौजूदा भाजपा सरकार ने निरस्त कर भगवान विश्वकर्मा का अपमान कर दिया। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में सपा सरकार में मुलायम सिंह यादव तथा अखिलेश यादव ने रामआसरे विश्वकर्मा को मन्त्री बनाया था। अगर उत्तर प्रदेश में विश्वकर्मा समाज का मन्त्री हो सकता है तो झारखण्ड और दूसरे राज्यों में विश्वकर्मा समाज का मन्त्री और विधायक क्यों नहीं हो सकता? देश व प्रदेश की सरकारों ने विश्वकर्मा समाज का न तो मन्त्री बनाया न तो भागीदारी दी और न विकास की तरफ ध्यान दिया। यही कारण है कि विश्वकर्मा समाज की आर्थिक सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्र में भागीदारी न के बराबर है।

श्री विश्वकर्मा ने कहा कि समाज को आबादी के अनुरूप लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा और सरकार में हिस्सेदारी नहीं दी गयी। हमारे लोहे और लकड़ी के कारोबार और रोजगार के लिये न तो कानून बनाया गया और न योजनाएं चलायी गयी। आरक्षण के तहत विश्वकर्मा समाज के युवकों को नौकरी व सम्मान नहीं दिया गया। हमारे बंटे और बिखरे होने के कारण आज तक न तो विश्वकर्मा समाज की सामाजिक ताकत बन पाई और न हम राजनैतिक हिस्सेदारी ले पाये। श्री विश्वकर्मा ने झारखण्ड के पलामू और आसपास के लोगों को विश्वास दिलाया कि वह अपने को अकेला न समझें, हम लोग लखनऊ से आकर आपके हर संघर्ष में ताकत देंगे।

यूपी की भाजपा सरकार विश्वकर्मा समाज के साथ कर रही अन्याय

कार्यक्रम का संचालन लव कुमार विश्वकर्मा तथा अध्यक्षता झारखण्ड विश्वकर्मा समाज के जिलाध्यक्ष मनोज कुमार विश्वकर्मा ने किया।

कार्यक्रम को विशिष्ट अतिथि गौतम सागर राना पूर्व विधायक, राजेन्द्र विश्वकर्मा राष्ट्रीय अध्यक्ष, गौरीशंकर शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष दशरथ शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष केशव विश्वकर्मा, सुरेन्द्र विश्वकर्मा, विक्रान्त विश्वकर्मा, पं0 धर्मदेश शर्मा, आनन्द विश्वकर्मा, अजीत विश्वकर्मा, मनु शर्मा, विजय विश्वकर्मा सहित कई नेताओं ने सम्बोधित करते हुये विश्वकर्मा समाज की मजबूती के लिये महासम्मेलन में अपने विचार रखे।

बेटी के जन्मदिन पर अनाथालय पहुंचा राकेश विश्वकर्मा का परिवार

लखनऊ। विज्डम वे प्रोग्रेसिव इण्टर कालेज व न्यू विज्डम वे प्रोग्रेसिव इण्टर कालेज के प्रबन्धक तथा समाजसेवी राकेश विश्वकर्मा ने बेटी के जन्मदिन पर लखनऊ स्थित अनाथालय में पहुंचकर अनाथों के बीच लन्चबाक्स बांटकर बेटी का जन्मदिन मनाया। उनके साथ उनकी पत्नी, बेटी जूही विश्वकर्मा, बेटा प्रिन्स विश्वकर्मा भी थे। पूरे परिवार ने मिलकर अनाथालय में लन्चबाक्स वितरित किया।

राकेश विश्वकर्मा ने कहा कि लोग बेटा-बेटी के जन्मदिन पर घर में खुशियां मनाते हैं वह तो ठीक है परन्तु होटलों में जाकर पार्टी करना, नाजायज खर्च करना, वह गलत मानते हैं। उन्होंने कहा कि हम सभी नाजायज खर्च को गरीबों और अनाथों के बीच बांटकर सुकून महसूस करते हैं। हमें बेटों-बेटियों के लिये दुआओं की आवश्यकता है न कि नाजायज खर्चकर दिखावा करने की। बता दें कि राकेश विश्वकर्मा की बेटी जूही विश्वकर्मा लखनऊ के ऐरा मेडिकल कालेज से एमबीबीएस की पढ़ाई कर रही हैं।

राज्य स्तरीय लोहार जनजाति सम्मेलन सम्पन्न

पटना। बिहार प्रदेश जनता दल यूनाइटेड आदिवासी प्रकोष्ठ के तत्वाधान में राज्य स्तरीय लोहार जनजाति सम्मेलन विद्यापति भवन, पटना, बिहार में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद आर0सी0पी0 सिंह रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में विधायक रवि ज्योति कुमार राजगीर, विधायक महेश्वर प्रसाद सिंह उपस्थित रहे। सम्मेलन के आयोजनकर्ता राजकिशोर ठाकुर ने अध्यक्षता की तथा मंच का संचालन अमीरी लाल ठाकुर उर्फ लोहार गांधी ने किया। यह सम्मेलन पूर्ण रूप से सम्पूर्ण लोहारमय एवं बिहार

लोहार जनजाति समुदाय के राजनीतिकरण, सामुदायिक विकास एवं शैक्षणिक, सामाजिक विकास तथा मुख्य रूप से लोहार समुदाय के छात्रों की समस्या के उचित निदान करने के लिए सार्थक पहल करने के प्रयास से किया गया।

मुख्य अतिथि आर0सी0पी0 सिंह, अध्यक्ष राज किशोर ठाकुर एवं कैलाश ठाकुर (मैथ गुरू) ने सम्मेलन का उद्घाटन दीप प्रज्जवलित करके किया। तत्पश्चात अपने अभिभाषण में लोहार जाति समुदाय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि लोहार जाति पैदाइशी इंजीनियर होते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि लोहार समाज के साथ बिहार सरकार के अधिकारी एवं बिहार सरकार के मुखिया मुख्यमन्त्री नीतीश कुमार साथ खड़े हैं, हर कदम पर साथ चल रहे हैं। उन्होंने कहा कि आपके उचित मांग का हम लोग मिलकर समस्या का निदान करने का सार्थक पहल करेंगे। जब तक निदान नहीं होता तब तक हम न रुकेंगे न थकेंगे। कहा कि मैं आश्वस्त करता हूं कि इस समस्या को मजबूती से आवाज उठाने का काम करूंगा, आप मेरे साथ हैं और मैं आपके साथ हूं।

इस सम्मेलन में युवा छात्र प्रतिनिधि का नेतृत्व करते हुये अवध बिहारी शर्मा ने अपने तरीके से अतिथि के समक्ष समस्याओं पर प्रकाश डाला। कहा कि हम सभी की जातीय समस्या संसद में लगभग 5 बार माननीय सांसदों द्वारा उठाया गया है। हमारे समाज के छात्रों का भविष्य एवं जीवन बर्बाद हो रहा है, मैं भी एक छात्र हूं, कितना दुःख है मैं खुद समझता हूं। आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूं कि बिहार लोहार समाज की 73 वर्षों की सामूहिक जातीय समस्या का स्थाई समाधान किया जाये। इस कार्य के लिए मुख्यमन्त्री को अपना सम्पूर्ण लोहार समाज सपरिवार ऋणी रहेगा। मंच संचालनकर्ता अमीरी लाल ठाकुर उर्फ गांधी, अध्यक्षता कर रहे राजकिशोर ठाकुर एवं अन्य अतिथियों के साथ संपूर्ण बिहार लोहार समाज के सम्मुख अवध

बिहारी शर्मा को 'लोहार यूथ आइकॉन' की उपाधि देकर सम्मानित किया गया। अवध बिहारी द्वारा लोहार शिक्षा केन्द्र, लोहार दहेज मुक्त विवाह, लोहार जंसघ बिहार जैसे कार्य सम्पादित किये जा रहे हैं।

इसी मंच पर अपना लोहार वेबसाइट के फाउण्डर युवा को सतीश कुमार शर्मा को भी सम्मानित किया गया। दोनों युवाओं को कैलाश ठाकुर (मैथ गुरू) ने माला पहनाकर व शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया। दोनो युवा लोहार समाज के कर्णधार हैं जो इतनी कम उम्र से ही सामाजिक कार्यों में रुचि रखते हैं।

इस अवसर पर लोहार समाज के हितैषी एवं सामाजिक नेता, कार्यकर्ता एवं सभी जिला आदिवासी प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष, प्रखण्ड अध्यक्ष तथा अमीरीलाल ठाकुर पुर्वी चम्पारण, धर्मेन्द्र शर्मा, श्यामसुंदर विश्वकर्मा, दिनेश शर्मा सीतामढ़ी, इन्दु देवी औरंगाबाद, विजय विश्वकर्मा, मनोज कुमार ठाकुर गोपालगंज, सुरेन्द्र ठाकुर, रविन्द्र कुमार शर्मा आरा, दयानन्द विश्वकर्मा गया, योगेश राज विश्वकर्मा जहानाबाद, मुकेश शर्मा अरवल, नन्दलाल विश्वकर्मा, नवीन कुमार शिवहर, डा0 रामजी विश्वकर्मा, भीम विश्वकर्मा प्रवक्ता गया, राधाकांत ठाकुर प्रवक्ता पूर्वी चम्पारण के साथ ही लोहार युवा प्रतिनिधि के रूप में अवध बिहारी शर्मा (ए0बी0 शर्मा) पूर्वी चंपारण, सतीश कुमार शर्मा पूर्वी चम्पारण, विवेक कुमार शर्मा, गौरव कुमार वैशाली, ओम प्रकाश शर्मा, रघुवंश प्रताप, शशि कुमार शर्मा, सिद्धान्त कुमार, रामप्रवेश विश्वकर्मा, अशोक विश्वकर्मा, पवन कुमार, श्रीकांत शर्मा सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

विश्वकर्मा लोहार समिति बगोदर शाखा का गठन

गिरीडीह। विश्वकर्मा लोहार समिति (रु7जि0) धनबाद प्रधान कार्यालय से आये पदाधिकारियों ने लोहार समाज की एकजुटता को लेकर समिति का क्रमबद्ध करते हुए बगोदर शाखा का गठन किया। गठन के लिये आहूत बैठक का संचालन हुलास कुमार विश्वकर्मा की देख रेख में प्रारंभ हुआ। अन्य प्रखण्ड से आये गणमान्य लोहार भाइयों ने साथ में मिलकर कार्यक्रम में अपना योगदान दिया। सर्वप्रथम सर्वसम्मति से समिति के पदाधिकारियों का चयन किया गया जिसमें अध्यक्ष- हुलास कुमार विश्वकर्मा, सचिव-राजेश कुमार विश्वकर्मा, कोषाध्यक्ष– भोला विश्वकर्मा चुने गए।

बैठक की अध्यक्षता मुंशीलाल विश्वकर्मा ने किया। धनबाद से आये विश्वकर्मा लोहार समिति के अध्यक्ष विजय कुमार विश्वकर्मा ने कहा कि 13 प्रखण्ड के लोहार बन्धु को एक झण्डे के तहत लेकर सभी प्रखण्ड को मिलायें और एक जिला अध्यक्ष का चयन करें। फिर 24 जिला के जिलाध्यक्ष के साथ मिलकर प्रदेश अध्यक्ष का चयन करने का लक्ष्य रखें। इस अवसर पर धनबाद समिति के सचिव विजय कुमार शर्मा ने सर्वसम्मति से चुने गए शाखा पदाधिकारियों को एकजुट रहकर समाज के उत्थान के लिए तत्पर रहने को कहा। समिति के कोषाध्यक्ष सुरजवीर प्रसाद ने कहा कि समाज के सक्षम व्यक्ति को तन–मन और धन से समाज की मदद के लिए आगे आना चाहिए ताकि हमारा समाज मजबूत हो सके।

बिरनी प्रखण्ड से आये मुंशी विश्वकर्मा ने सरकार से लोहार जाति को अनुसूचित जनजाति सूची से विलुप्त किये जाने पर सरकार से नाम को जोड़वाने के लिए समाज के प्रतिनिधि मण्डल को मुख्यमन्त्री से मिलने के लिए कहा। सरिया प्रखण्ड अध्यक्ष हीरालाल विश्वकर्मा ने हुलास विश्वकर्मा के द्वारा किये गए एकजुटता कार्यक्रम को काफी सराहनीय कार्य बताया। अंत मे हुलास विश्वकर्मा ने सभी का धन्यवाद किया। बैठक में महेश विश्वकर्मा, गणेश विश्वकर्मा, जुगनू विश्वकर्मा, बालदेव विश्वकर्मा, गोपाल विश्वकर्मा, कुंती देवी, सरिता देवी, गुड़िया देवी एवं भारी संख्या में लोहार भाई उपस्थित हुए।

राजस्थान की पार्वती जांगिड़ को मिला 'भारत की लक्ष्मी' प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार

दिल्ली। इण्डिया इण्टरनेशनल सेन्टर आईओईडी, आईपीसी की तरफ से आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में दस से अधिक देशों के प्रतिनिधियों, देश के वरिष्ठ अधिकारियों तथा भिन्न–भिन्न राजदूतों की गरिमामयी मौजूदगी में राजस्थान की पार्वती जांगिड़ को 'भारत की लक्ष्मी' पुरस्कार प्रदान किया गया। भारत की लक्ष्मी पुरस्कार समिति, दिल्ली द्वारा यह नारी शक्ति को समर्पित पुरस्कार प्रदान तो किया ही गया, साथ ही रिपब्लिक ऑफ माल्डोवा के रिप्रेजेन्टेटिव, बिजनेस वर्ल्ड के हेड, और माल्डोवा के पूर्व प्रधानमंत्री HH Chiril Gaburici द्वारा एशिया की कल्चरल एम्बेसडर का प्रमाण पत्र व ध्वज देकर आधिकारिक एम्बेसडर भी बनाया गया।

इस अवसर पर पार्वती जांगिड़ ने इन विदेशी राजदूतों, रिप्रेजेन्टेटिवज को भगवन श्रीकृष्ण की वाणी रूप अंग्रेजी–हिंदी माध्यम की दिव्य श्रीगीता की प्रति देकर साफा पहनाकर सम्मान के साथ आभार प्रकट किया।

इनकी गरिमामयी मौजूदगी में दिया गया सम्मान-

पार्वती जांगिड़ के सम्मान प्राप्त करने के इस अवसर पर आचार्य लोकेश मुनि, आध्यत्मिक गुरु पवन सिन्हा, मेजर जनरल एस0बी0 अस्थाना, मेजर जनरल पी0के0 सहगल, सुधीर कुमार आई0जी0 बीएसएफ, डॉ0 अरविन्द कुमार शर्मा, डिप्लोमेट अचल शर्मा, चांसलर मार्कण्डेय, एस0 गुप्ता सनराइज यूनिवर्सिटी, पंचकूला के पुलिस कमिश्नर सौरभ सिंह, कर्नल इंद्रजीत सिंह, गुरजिंदर सिंह एडीजी छत्तीसगढ़ पुलिस, एम्बेसडर फेडर, नाइजेरिया के प्रथम सचिव मुस्तफा, लेफ्टिनेंट जनरल गालमा फिलीपीन्स, आईजीवीपीएस पंवार इत्यादि अधिकारी व गणमान्य लोगों की मौजूदगी रही।

अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासंघ ने विश्वकर्मा पूजा दिवस पर कराया शपथ ग्रहण

गोरखपुर। भगवान विश्वकर्मा पूजन दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासंघ व पूर्वांचल सोनार समिति के तत्वावधान में विश्वकर्मा पूजा व महासंघ के पदाधिकारियों के शपथग्रहण का आयोजन सर्राफा भवन हिन्दी बाजार घंटाघर गोरखपुर में किया गया।

महासंघ में महेश वर्मा (अध्यक्ष पूर्वांचल सोनार समिति) को संरक्षक सदस्य व गणेश वर्मा को उत्तर प्रदेश का उपाध्यक्ष, संतोष वर्मा को गोरखपुर महानगर अध्यक्ष, गोपाल वर्मा को गोरखपुर महानगर संगठन मंत्री, श्रीचन्द्र वर्मा को जिला संगठन मंत्री तथा संतोष कुमार वर्मा को वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य गोरखपुर के पद पर पदस्थ कर शपथग्रहण कराया गया। समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी लवकुश विश्वकर्मा मऊ रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में हरिशंकर लाल वर्मा ब्लाक प्रमुख परतावल महराजगंज, डॉ0 वी0एन0 विश्वकर्मा गोरखपुर, राम अवतार विश्वकर्मा गोरखपुर रहे।

समारोह में विश्वकर्मा समाज के कई नामचीन व सामाजिक लोगों को सम्मानित किया गया व विश्वकर्मा समाज के उत्थान व विकास के लिए मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवज्ञ को एक मंच पर आकर अपने पारिवारिक, सामाजिक शैक्षणिक, आर्थिक व राजनैतिक अधिकारों हेतु उद्घोष कर

अपना अधिकार लेने पर जोर दिया गया। कार्यक्रम स्वर्णकार मंडल जिला गोरखपुर की तरफ से आयोजित किया गया इसमें प्रमुख भूमिका में महेश वर्मा व श्रीचन्द्र वर्मा रहे। महासंघ के संयोजक वेदप्रकाश शर्मा ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए सभी के प्रति आभार प्रकट किया।

अंधेरी में हर्षोल्लास से हुआ विश्वकर्मा पूजा बड़ी संख्या में लोगों ने लिया भाग

मुम्बई। भारतीय श्री विश्वकर्मा कल्याण समाज ने अंधेरी (पू0) के निखिलावाड़ी स्थित भगवान श्री विश्वकर्मा मन्दिर परिसर में सार्वजनिक श्री विश्वकर्मा महापूजा महोत्सव का आयोजन किया। महापूजा में बड़ी संख्या में विश्वकर्मा समाज के लोगों ने भाग लेकर भगवान श्री विश्वकर्मा की पूजा–अर्चना की।

इस मौके पर भारतीय श्री विश्वकर्मा कल्याण समाज, अंधेरी के कोषाध्यक्ष और पूजा के संयोजक रामचन्द्र विश्वकर्मा ने कहा कि जगत निर्माता भगवान श्री विश्वकर्मा जी हमारे आराध्य देव हैं। जिनके सम्मान में हम लोग यहां हर साल 17 सितम्बर को सार्वजनिक श्री विश्वकर्मा महापूजा महोत्सव आयोजित करते हैं। हमारे इस कार्यक्रम में मुम्बई के अलावा दूरदराज के लोग भी भाग लेते हैं।

इस अवसर पर डॉ0 के0के0 विश्वकर्मा, मोहन विश्वकर्मा, अरविन्द विश्वकर्मा, शिवचन्द्र छेदीलाल विश्वकर्मा, रामशकल विश्वकर्मा सहित बड़ी संख्या में संस्था के पदाधिकारी और विश्वकर्मा समाज के लोग व संस्था के कार्यकर्तागण उपस्थित रहे।

उत्तर भारतीय विश्वकर्मा समाज ने सौंपा पत्रक

मुम्बई। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के दौरान उत्तर भारतीय विश्वकर्मा समाज ने उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमन्त्री केशव मौर्या से मुलाकात कर पत्रक सौंपा। समाज के लोगों ने उत्तर प्रदेश में विश्वकर्मा समाज के ऊपर हो रहे अत्याचार और उत्पीड़न की घटनाओं से उप मुख्यमन्त्री को अवगत कराते हुए तत्काल कार्यवाही और सुरक्षा की मांग की। उप मुख्यमंत्री केशव मौर्या ने भारोसा दिया कि वह और उनकी सरकार विश्वकर्मा समाज के सम्मान और सुरक्षा के प्रति गम्भीर हैं। यदि कहीं चूक हुई है तो जांच कराकर कार्यवाही की जायेगी। मुम्बई में रह रहे उत्तर प्रदेश विश्वकर्मा समाज के लोगों ने श्री मौर्या से मुलाकात कर बुकें देकर उनका स्वागत

किया और साथ ही एक पत्रक सौंपा जिसमें विश्वकर्मा समाज के ऊपर हो रहे अत्याचार और उत्पीड़न की घटनाओं का जिक्र किया गया था। इस मौके पर भाजपा नेता महेन्द्र विश्वकर्मा, संतलाल विश्वकर्मा, राधेश्याम विश्वकर्मा, चंद्रकेश विश्वकर्मा आदि लोग उपस्थित रहे।

विश्वकर्मा समाज के बिना देश का विकास सम्भव नहीं- महेन्द्र

कुशीनगर। विश्वकर्मा महासभा के प्रदेश अध्यक्ष एवं भाजपा नमामि गंगे, लखनऊ के संयोजक महेन्द्र विश्वकर्मा ने कहा कि विश्वकर्मा समाज के बिना देश के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। आदिकाल से लेकर अबतक जितने भी अलौकिक कार्य हुये हैं वह भगवान विश्वकर्मा और उनके वंशजों की देन है। श्री विश्वकर्मा कुशीनगर जिले के पडरौना में जी-स्टार होटल में आयोजित 'विचार समागम सम्मेलन' को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भगवान विश्वकर्मा ने देवताओं को अस्त्र-शस्त्र देकर देवनगरी को राक्षसों से मुक्त कराया तो भारत देश की आजादी में विश्वकर्मा वंशजों ने अस्त्र-शस्त्र बनाकर देश को आजाद कराने में योगदान दिया।

श्री विश्वकर्मा ने कहा कि 'विश्वकर्मा' के बगैर विकास की कल्पना कोरी है। दुःखद पहलू यह है कि विश्वकर्मा समाज प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी है परन्तु राजनीति में बहुत पीछे है। हम सभी को राजनीति में अपनी हिस्सेदारी बढ़ानी होगी। विश्वकर्मा समाज को राजनीति से दूर रखने के लिये बड़ी साजिश भी की गई है। हमें इस साजिश को समझते हुये स्वयं आगे बढ़ने का रास्ता चुनना होगा।

विश्वकर्मा ब्रिगेड के प्रभारी व पूर्वांचल के मजबूत स्तम्भ युवा नेता चन्दन विश्वकर्मा ने कहा कि हमारी आबादी किसी से कम नहीं है। हमें अपनी जनसंख्या का एहसास राजनीतिक दलों को कराना होगा। उन्होंने समाज के लोगों से अपील किया कि सभी लोग अपने घरों पर नेम प्लेट अवश्य लगायें। यदि किसी की टाइटिल 'विश्वकर्मा' शब्द से अलग है तो वह अपने नाम के साथ 'विश्वकर्मावंशी' जरूर लियें। ऐसा करने से हमारी जनसंख्या और आबादी का एहसास लोगों को शीघ्र होगा। उन्होंने कहा कि आये दिन चुनाव होते रहते हैं और प्रचार के लिये राजनीतिक पार्टियों के नेता गली-गली दौड़ते हैं। जब उन्हें गलियों में विश्वकर्मा के नेम प्लेट दिखेंगे तो विश्वकर्मा समाज की जनसंख्या का आंकलन वह खुद कर लेंगे। ऐसा करने से हम कदम-दर-कदम आगे बढ़ सकेंगे।

विश्वकर्मा विकास एवं सुरक्षा समिति के प्रदेश महामन्त्री व प्रवक्ता पवन शर्मा ने धर्म, शिक्षा और राजनीति पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने तीनों मुद्दों पर के महत्व और उपयोग को लोगों के सामने विस्तार से बताया।

प्रमुख सामाजिक चिन्तक व राजनारायण सर्वजन उत्थान सेवा संस्थान के चेयरमैन अरविन्द विश्वकर्मा ने शिक्षा को महत्वपूर्ण बताते हुये कहा कि बिना शिक्षा के किसी भी क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ा जा सकता, यदि बढ़ भी गये तो कार्य करने में कठिनाई होगी।

इस अवसर पर आयोजक सुनील शर्मा, रमेश शर्मा, रमाकान्त विश्वकर्मा, विजय प्रताप शर्मा, त्रिलोकी विश्वकर्मा, उमा विश्वकर्मा, शिवकुमार विश्वकर्मा आदि लोग उपस्थित रहे।

कार्यालय नगर पंचायत कछौना पतसेनी, जनपद-हरदोई

Website- kachhaunapatseni.in
E-mail- npkphdi@gmail.com
Teliphone- 05854-275050

धनतेरस, दीपावली एवं कार्तिक पूर्णिमा के शुभ अवसर पर नगर को स्वच्छ रखने व नगर के सर्वांगीण विकास हेतु कृत संकल्पित नगर पंचायत कछौना पतसेनी की ओर से समस्त नगर वासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

नगर वासियों से अपील

''आइये हम सब मिलकर इस प्रकाश पर्व दीपावली पर संकल्प लें''

1- नगर को साफ सुथरा रखने में सहयोग करेंगे।
2- नगर के बकाया गृहकर, जलमूल्य, आदि को समय पर जमा कराकर विकास कार्यों में सहयोग करेंगे।
3- सार्वजनिक भूमि पर अतिक्रमण नहीं करेंगे।
4- जल ही जीवन है, जल का अपव्यय नहीं करेंगे।
5- जन्म-मृत्यु का पंजीकरण समय से करायेंगे।
6- हम सब मिलकर स्वच्छता के प्रति सजग रहते हुये गंदगी नहीं करेंगे।
7- कूड़ा करकट सड़कों/सार्वजनिक स्थलों पर न डालकर कूड़ेदानों का ही प्रयोग करेंगे।
8- अपने नगर को प्रदूषण रहित रखेंगे। खुले में शौच नहीं करेंगे।
9- कटे एवं सड़े गले फलों का प्रयोग नहीं करेंगे।
10- पालीथीन का प्रयोग नहीं करेंगे। पर्यावरण को सवच्छ बनाने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे।
11- नगर पंचायत आपके सहयोग एवं सुझाव के लिये सदा आभारी रहेगा।

(अनुज अवस्थी)
अधिशासी अधिकारी
न0प0 कछौना पतसेनी

(मीनू)
अध्यक्ष
न0प0 कछौना पतसेनी

सदस्यगण- शान्ती देवी, रंजीतराव गौतम, धर्मेन्द्र सिंह, अनुराधा, अभय सिंह, जमील, सुमन देवी, अरविन्द कुमार, सुषमा सिंह, गोधन, सोफिया, मीना।

पहली बार में मिली सफलता, महराजगंज के अवधेश कुमार विश्वकर्मा बने डीएसपी

महराजगंज। यूपी पीसीएस–2017 के घोषित परिणाम में महराजगंज के अवधेश कुमार विश्वकर्मा ने सफलता प्राप्त करते हुये डीएसपी रैंक हासिल की है। उनकी इस सफलता से परिवार सहित जिले में भी हर्ष का माहौल है। जिले के निवासी जितेन्द्र प्रसाद विश्वकर्मा के पुत्र अवधेश ने पहली बार परीक्षा दी थी जिसमें सफलता पाई। परिणाम आने के बाद परिजन खुशी से झूम उठे। बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ है। परिजन मिठाई बांटकर खुशी का इजहार कर रहे हैं।

अवधेश कुमार विश्वकर्मा की प्रारम्भिक शिक्षा कक्षा एक से पांच तक सरस्वती शिशु मंदिर में हुई, माध्यमिक शिक्षा लाल बहादुर शास्त्री इण्टर मीडिएट कॉलेज से हुई और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा सेठ आनंदराम जयपुरिया इंटर कॉलेज से पूरी करी। इन्होंने ग्रेजुएशन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से किया। ग्रेजुएशन के बाद अवधेश ने इलाहाबाद में यूपी पीसीएस की तैयारी शुरू कर दी। कड़ी मेहनत के बाद इन्होंने 2017 पीसीएस में डिप्टी एसपी पद पर क्वालीफाई किया। इन्होंने अपना सफलता का श्रेय अपने माता–पिता तथा नाना–नानी व गुरुजनों को दिया है। उन्होंने कहा कि दोस्तों की गाइडलाइन ने भी इस सफलता में भरपूर साथ दिया है।

आल इण्डिया ओएनजीसी ओबीसी वेलफेयर एसोसिएशन ने निराश्रितों में बांटा कम्बल

आजमगढ़। ऑल इण्डिया ओएनजीसी ओबीसी, एमओबीसी वेलफेयर एसोसिएशन दिल्ली की तरफ से असहाय निराश्रितों एवं गरीब व्यक्तियों को ठंड से बचाव के लिए शिविर आयोजित कर कम्बल वितरित किया गया। जिले के सगड़ी क्षेत्र अंतर्गत दाउदपुर में आयोजित कम्बल वितरण शिविर के मुख्य अतिथि सगड़ी उपजिलाधिकारी रहे। स्व० रामकेवल शर्मा व स्व० सूर्यनाथ शर्मा की स्मृति में वर्तमान सरकार की नीति सबका साथ-सबका विकास के अनुरूप कार्य करते हुए सैकड़ों लोगों को कम्बल वितरित किया गया।

मुख्य अतिथि सगड़ी एसडीएम राघवेंद्र सिंह ने कहा कि निस्वार्थ सेवा भाव ही कामयाबी का मूलमंत्र है। वहीं ओएनजीसी के सचिव केपी मोहिदेकर एवं संयुक्त सचिव सुधीर शर्मा ने कहा कि मनुष्य को मनुष्य क्यों कहते हैं? मनुष्य वही होता है जो दूसरों की सेवा करता है। अधिवक्ता आशीष शर्मा (पिन्टू) ने कहा कि यही प्रयास होगा कि यह सेवा निरंतर क्षेत्र में जारी रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में भाजपा के वरिष्ठ नेता जयप्रकाश पाण्डेय का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर अंकुर, धीरेन्द्र वीर, संजय यादव, केदार चौहान, रमेश गौतम, अजय, अभिषेक शर्मा, रवि बाबू एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता संघ शिक्षक प्रशान्त शर्मा आदि लोग उपस्थित रहे। शिविर के सफल आयोजन में ग्रामवासियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

श्रेया एसोसिएट्स

Shreya Associates

धावा स्टेट, निकट मटियारी, लखनऊ-226028

विश्वकर्मा समाज के प्रति व विश्वकर्मा समाज के लिये मेरे विचार

Founder & M.D.
Poonam Vishwakrma

एक समय था, जब लोग विश्वकर्मा वंशियों का मान-सम्मान करते थे और करें भी क्यों न भई हम विश्वकर्मा (सृष्टि रचयिता) के वंशज हैं। परन्तु आज तो ऐसा नहीं दिखता, हम पिछड़े हुये हैं, क्योंकि विश्वकर्मा समाज में अशिक्षा है, एकता नहीं है। बड़े ही दु:ख के साथ कहना पड़ता है, कि हमारे विश्वकर्मा समाज में लोग हाथ बढ़ाकर मदद करने के बजाय पैर पकड़कर खींचने का प्रयास करते हैं।

कभी आपसे किसी ने कहा है- तुम कितने लोग हो? हह! तुम क्या कर सकते हो? तुमसे जो हो सकता है, कर लो। देखते हैं कौन है तुम्हारे पीछे।

जब स्वाभिमान को ठेस पहुंचता है, मन घायल होता है, तो बहुत ग्लानि होती है ना।

कभी आपने खुद के प्रश्न किया है, कि हमारी वास्तविकता क्या है, हम सर्वश्रेष्ठ कैसे हैं? हम हैं कौन?

अब यदि आपको लगता है, कि आप अपने लिए, धर्म के अस्तित्व के लिए, विश्वकर्मा वंशियों के अस्तित्व के लिए कुछ कर सकते हैं तो आइए साथ मिलकर ललकार करें, प्रभु विश्वकर्मा की जय जयकार करें।

मैं पूनम विश्वकर्मा फाउण्डर ऑफ श्रेया एसोसिएट्स, मैं व्यवहारिक रूप से व अपने फर्म के माध्यम से रोजगार क्षेत्र में विश्वकर्मा समाज के लोगों को प्राथमिकता देती हूं। मेरा उद्देश्य विश्वकर्मा समाज को आगे बढ़ाना है, इसके लिए मैंने निरन्तर व तत्पर रूप से कार्य किया है, विश्वकर्मा समाज में जरुरतमंद की मदद भी किया व आगे भी करती रहूँगी।

विश्वकर्मा समाज के प्रति मेरे उद्देश्य की पूर्ति के लिए परिवार के रुप में सहयोगी/ भागीदार बनें, क्योंकि हम सब एक परिवार हैं।

यदि आपके धमनियों में प्रभु विश्वकर्मा का रक्त है तो एकता की शक्ति को पहचानिए, भेदभाव खत्म कीजिए, शिक्षित बनिए, समाज में विश्वकर्मा परिवारों से मेल जोल/परिचय/ पहचान बढ़ाइए, किसी विश्वकर्मा परिवार के दु:ख की घड़ी में अन्य विश्वकर्मा परिवारों व अपने स्वयं से जो मदद कर सकते हैं, कीजिए।

एक बात याद रखिये, आज आप विश्वकर्मा समाज/परिवार के लिए खड़े हैं, तो कल व अनन्त काल तक विश्वकर्मा समाज/परिवार आपके मदद के लिए खड़ा रहेगा। अत: अपने पांव पसारिये। अनेक विश्वकर्मा, संगठन अध्यक्ष, राजनेता, कार्यकर्ता, डॉक्टर, समाजसेवक, अधिकारी के रुप में विश्वकर्मा समाज को और बड़ा बनाने में प्रयासरत हैं, आप भी प्रयास कीजिए, आपका योगदान महत्वपूर्ण है।

आप विश्वकर्मा (सृष्टि रचयिता) के वंशज हैं, आप कुछ भी कर सकते हैं।

Poonam Vishwakarma

Founder & M.D.
Poonam Vishwakrma

shreyaassociates.com +91 9628545000 +91 7897060124 shreyaassociates913@gmail.com
facebook.com/shreyaassociateslko Shreya Associates linkedin.com/in/shreyaassociateslko

बनवाएँ अपने सपनों का घर

हमारे यहाँ सभी प्रकार के भवन के नक्शे एवं निर्माण का कार्य कुशल इंजीनियरों के देखरेख में कान्ट्रेक्ट बेस पर किया जाता है।

हमारी सेवाएं

- ★ डिजाइन, ड्राइंग (नक्शा), इस्टीमेट, वैल्युवेशन।
- ★ सभी सिविल कंस्ट्रक्शन वर्क एक्सटीरियर व इन्टीरियर डिजाइन के साथ।
- ★ एडवाइजर एडवोकेट्स
- ★ 600 वर्गफुट एरिया का ए.सी. हॉल पार्टी/मीटिंग एवं अन्य कार्यक्रम हेतु 24 घंटे उपलब्ध है।

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

सम्पर्क करें

SHREYA ASSOCIATES

Plot No. 310, Dhawa State, Goyala, Chinhat, Lucknow-226028

E-mail : shreyaassociates913@gmail.com, Website : www.shreyaassociates.com

Mob. 9628545000, 7897060124

परिवार में वट वृक्ष के समान होते हैं बुजुर्ग

भागलपुर। भारत में संयुक्त परिवार की अवधारणा शुरू से रही है, जिसमें बुजुर्गों को परिवार का धरोहर माना जाता रहा है। बुजुर्ग परिवार में वट-वृक्ष के समान होते हैं जिनकी छाया में पूरा परिवार आगे बढ़ता है। हालाँकि, मौजूदा समय में एकल परिवार के बढ़ते प्रचलन से बुजुर्गों के मानझसम्मान में कमी है। 'मातृदेवो भवः पितृदेवो भवः' की परम्परा वाले भारत में बुजुर्गों पर अत्याचार और उनकी अनदेखी अब आम बात हो गयी है। बुजुर्गों पर अत्याचार सिर्फ उनके परिवार वाले ही नहीं करते हैं बल्कि सरकारें भी बुजुर्गों का ख्याल रख पाने में विफल साबित हो रही है। दुनिया भर में बुजुर्गों की बढ़ती आबादी के साथ उनके समुचित परवरिश, देखभाल और अधिकारों पर चर्चा करना समीचीन प्रतीत होता है। चूँकि, प्रत्येक वर्ष 1 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस पूरी दुनिया में मनाया जाता है। विशेषतया भारत को युवाओं का देश कहा जाता है जहाँ एक बड़ी आबादी युवाओं की है। वर्ष 2014 के यूएन रिपोर्ट के अनुसार भारत विश्व का सबसे बड़ा युवाओं का देश है। यहां 356 मिलियन युवा 10-24 वर्ष के हैं। वहीं, चीन इस मामले में दूसरे स्थान (269 मिलियन) पर है। एक ओर भारत जहां नौजवानों का देश है वहीं, हाल के वर्षों में बुजुर्गों की संख्या में भी इजाफा हुआ है। साथ ही बढ़ते जनसंख्या दर के अनुपात में आने वाले समय में बुजुर्गों की संख्या में भी वृद्धि होगी। 2050 तक भारत सहित दुनिया के तकरीबन 64 देशों में 'ओल्ड एज' की अधिकता हो जायेगी। ऐसी स्थिति तब ज्यादा भयावह हो जायेगी जब 2050 तक विकासशील राष्ट्रों में बुजुर्गों की संख्या 80 फीसदी तक हो जायेगी।

सेंसेक्स रिपोर्ट के अनुसार भारत में ओल्ड एज (60 वर्ष से ऊपर) की संख्या दस करोड़ से ज्यादा है। आज सम्पूर्ण विश्व वृद्धों की स्थिति को लेकर चिंतित है। आर्थिक सुदृढता एवं क्रियाशीलता वृद्धावस्था को खुशहाल करने में कारगर सिद्ध हो सकता है। वस्तुतः वृद्धावस्था (बुजुर्गावस्था) कोई अभिशाप नहीं है बल्कि यह मानव के शारीरिक विकास की एक सतत प्रक्रिया है। अर्थात, बुजुर्गावस्था प्राकृतिक और जैविक प्रक्रिया है। बुजुर्ग परिवार में वट–वृक्ष के समान होते हैं। आज वृद्धावस्था को मानव जीवन के प्राकृतिक भाग के रूप में स्वीकार करने की जरुरत है। आज भाग-दौड़ भरी जिंदगी और न्यूक्लीयर फैमिली की अवधारणा से बुजुर्गों की उपेक्षा हो रही है। न्यूक्लियर फैमिली में बुजुर्ग हेंडीकेप्ट हो जाते हैं। परिवार के मजबूत आधार स्तम्भ के भूमिका का निर्वहन करने वाले बुजुर्गों की उपेक्षा कतई न्यायोचित नहीं है। किसी भी समाज के लिए यह अत्यंत ही गंभीर चिंता का विषय है। बुजुर्गों के मान-सम्मान से ही सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी। हालाँकि, बुजुर्गों के साथ उत्पीड़न की आशंका एशिया के दूसरे देशों के मुकाबले भारत में सबसे कम होती है। एक अध्ययन के मुताबिक कहा गया है कि भारत में 14 फीसदी बुजुर्गों के समक्ष मानसिक, शारीरिक और आर्थिक शोषण का सामना करने की आशंका होती है। एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश चीन में यह आंकड़ा 36 फीसदी है। वहीं उत्तर एवं दक्षिण अमेरिका में बुजुर्गों के उत्पीडन का प्रतिशत 10-47 फीसदी के बीच है।

आंकड़ों के आधार पर भारत में सबसे कम सताए जाते हैं बुजुर्ग–

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम(यूएनडीपी) के अनुसार वर्ष 2010 में भारत में 60 साल से अधिक उम्र के लोगों की अनुमानित आबादी 9 करोड़ थी। आज 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की बड़ी आबादी के लिए नीतिगत उपायों को लागू करने की जरुरत है। यह सच है कि उम्रदराज लोग भारत की अर्थव्यवस्था और अपने अर्थव्यवस्था के जरिए वैश्विक अर्थव्यवस्था में बड़े पैमाने पर योगदान दे रहे हैं।

क्या है कानूनी और संवैधानिक प्रावधान-

बुजुर्गों के मानवाधिकारों की चर्चा प्रायः गौण हो जाती है। जबकि 10 दिसम्बर 1948 को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा स्वीकार किये गए अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा पत्र में शामिल कुल तीस अनुच्छेदों में से पहले अनुच्छेद में स्पष्ट रूप से सभी मानवों को गरिमापूर्ण जीवन जीने के अधिकारों का जिक्र है। भारत में भी बुजुर्गों की देखभाल के लिए 1999 ई0 में नेशनल पालिसी ऑन ओल्डर पर्सन्स (एनपीओपी) बनाया गया है। 2007 ई0 में पुनः मेंटेनेस एंड वेलफेयर ऑफ सीनियर सिटिजेन एक्ट लाया गया। इस एक्ट के तहत संतान का कर्तव्य है कि वो बुजुर्ग मां-बाप की जरूरतों का ख्याल रखें ताकि वो एक खुशहाल जिंदगी जी सकें। भारत में 1999 ई0 में लाए गए एक्ट के तहत साठ वर्ष से ऊपर के नागरिकों को 'सीनियर सिटीजन' का दर्जा दिया गया है। बुजुर्गों की देखभाल और समुचित परवरिश और अधिकारों का उल्लेख भारतीय संविधान में भी किया गया है। भारतीय संविधान के भाग चार में वर्णित राज्य के नीति-निर्देशक सिद्धांत के अनुच्छेद- 41 में कहा गया है कि वृद्धों (बुजुर्गों) की देखभाल, शिक्षा, चिकित्सा, आर्थिक और जनसहयोग सहित पोषण स्तर में वृद्धि राज्य करेगी। वहीं, अनुच्छेद-47 में जन स्वास्थ्य और लोगों के रहन-सहन को उन्नत करने की बात कही गयी है। इस संवैधानिक प्रावधान के द्वारा राज्यों को इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाने के लिए निर्देशित किया गया है। इसके अलावा डोमेस्टिक वायलेंस एक्ट के द्वारा भी बुजुर्गों की उचित देखभाल का उल्लेख है। सीआरपीसी की धारा 125(i)(d) के तहत न्यायालय किसी व्यक्ति को मेंटेनेंस ऑफ पैरेंट्स एक्ट के अन्तर्गत बुजुर्गों की समुचित देखभाल और परवरिश का आदेश जारी कर सकता है। हिंदू एडोप्सन और मेंटेनेस एक्ट, 1956 की धारा 20(3) के द्वारा भी बुजुर्गों की सुरक्षा व समुचित व्यवस्था का उल्लेख है।

क्या है समस्याएं?–

परिवार से अलगाव, बहिर्गमन, नियंत्रण की कमी, भय का माहौल, पारिवारिक रूप से नकारा जाना, स्वास्थ्य समस्या, आर्थिक समस्या के साथ-साथ बुजुर्गों में उपार्जन की स्थिति घट जाती है जिससे परिवार उन्हें बोझ समझने लगता है। जागरूकता और अधिकारों की सही जानकारी का अभाव, सामाजिक मान्यताएं और नियमों का अभाव, अशिक्षा आदि के चलते भी बुजुर्गों के साथ सौतेला व्यवहार होता है। एक आंकड़ा के मुताबिक 65 फीसदी बुजुर्ग अर्थिक रूप से निर्बल हैं। महज 35 फीसद बुजुर्गों के पास ही अपनी निजी सम्पति, धन, मकान तथा अपने परिवार और बच्चों का सहयोग मिल पाता है। बुजुर्गों को परिवार के द्वारा नकारा जाना, स्वास्थ्य सुविधाएँ नही मिलना, उनके साथ मारपीट, गाली-गलौज, अमर्यादित व्यवहार, अपमान, उपेक्षा, दोस्तों व परिवार के सदस्यों से नहीं मिलने देना, इमोशनल ब्लैकमेलिंग, भोजन, वस्त्र, दवा और अन्य आवश्यक सुविधाओं से महरूम रखना, उनकी सम्पतियों को जबरन छीनना या कब्जा करना आदि गंभीर समस्याओं से जूझना पड़ता है। इसके अलावे बुजुर्गों को सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और स्वास्थ्य समस्याओं से जूझना पड़ता है।

यूनाईटेड नेशन्स पॉपुलेशन फण्ड की रिपोर्ट के मुताबिक-

-भारत के नब्बे फीसदी बुजुर्गों को सम्मानपूर्वक जिंदगी जीने के लिए सारी उम्र काम करना पड़ता है।

-करीब साढ़े पांच करोड़ बुजुर्ग लोग रोजाना रात को भूखे सोने को विवश हैं।

-भारत में बुजुर्ग पेंशन के नाम पर सरकारें जीडीपी का सिर्फ 0.03% हिस्सा ही खर्च करती हैं।

-हर 8 में से 1 बुजुर्ग को लगता है की उनके होने या न होने से किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता है।

-तकरीबन पांच करोड़ बुजुर्ग गरीबी रेखा से नीचे रहने को मजबूर हैं। देश में अगले चार दशकों में बुजुर्गों की संख्या लगभग तिगुनी हो जाएगी। निश्चित ही आने वाले दिनों में बुजुर्गों के लिए सुरक्षा, आवास, स्वास्थ्य और मनोरंजन को लेकर तमाम प्रकार की समस्याएँ भी बढ़ेगी। समस्या का एक कारण सामाजिक बदलाव भी है। नगरों का विकास अधिक होने से गांव से शहर की ओर पलायन तेजी से बढ़ा है। उन बुजुर्गों की दशा तो और भी चिंतनीय हो गयी है जो केवल खेती पर ही निर्भर हैं। एकल परिवार में नयी पीढ़ी और बुजुर्गों के बीच एक जेनेरेशन गैप लगातार बढ़ रहा है। एक वक्त था जब माता-पिता को आदर्श मान उनका सम्मान किया जाता था। पूरे संसार में शायद भारत ही एक ऐसा देश है जहां तीन पीढियां सप्रेम एक ही घर में रहती थी। आज पाश्चात्य सभ्यता के वशीभूत देश के नौजवान माता-पिता के साथ चंद मिनट बिताना भी मुनासिब नही समझते।

क्या है सरकारी प्रावधान-

बात चाहे जितनी हैरत अंगेज लगे लेकिन तथ्य यही है की देश में एक तरफ बुजुर्गों की संख्या बढ़ रही है तो वहीं दूसरी तरफ उनकी मदद के लिए किये जा रहे सरकारी प्रयास में कमी आयी है जो खेदजनक है। लेकिन बुजुर्गों की मदद के लिए चलाये जा रहे इंटीग्रेटेड प्रोग्राम फॉर ओल्डर पर्सन्स के तहत किये जाने वाले प्रयासों के दायरे में गत कुछ वर्षों में कमी

आयी है। गौरतलब है कि सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय वर्ष 1992 से यह कार्यक्रम चला रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत स्वंयसेवी संस्थाओं, पंचायती राज संस्थाओं और स्थानीय निकाय के हाथ मजबूत किये जाते हैं ताकि वे बुजुर्ग लोगों को आश्रय, भोजन, चिकित्सा सुविधा मुहैया करायें। बुजुर्गों की हालात बयां करती सरकारी रिपोर्ट संकेत करती है कि देश के ज्यादातर बुजुर्ग सरकारी सहायता की कमी के कारण आर्थिक रूप से या तो अपने परिवार जन के आसरे हैं या आराम की उम्र में भी अपना खर्च चलाने के लिए कोई न कोई काम करने को मजबूर हैं। रिपोर्ट के मुताबिक जीवन निर्वाह के लिए दूसरों पर निर्भर सबसे ज्यादा बुजुर्ग पुरुष (43 प्रतिशत) केरल में है और सबसे कम जम्मू-कश्मीर (21 प्रतिशत) में। वहीं, जीवन निर्वाह के लिए दूसरों पर निर्भर बुजुर्ग महिलाओं की सबसे ज्यादा संख्या (81 फीसदी) असम में है और सबसे कम हरियाणा (44 फीसदी) में।

वृद्धापेंशन से सम्बन्धित यूनाईटेड नेशन्स के एक हालिया आंकलन में कहा गया है कि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धा पेंशन योजना के तहत बीते सालों में पेंशन पाने वाले बुजुर्गों की संख्या तो बढ़ी है (1.5 करोड़ से अधिक बुजुर्ग) लेकिन इस योजना पर सरकार अब भी अपने सार्वजानिक खर्चे का महज 1 प्रतिशत से भी कम खर्च करती है और केंद्र सरकार या राज्य योजना पर खर्च की जाने वाली रकम आधी से भी कम है। बुजुर्गों के कल्याण के लिए वर्तमान समय में सरकारी स्तर पर कई योजनाएं चलायी जा रही हैं। केन्द्र और राज्य सरकारों की ओर से बुजुर्गों को दी जाने वाली वृद्धा पेंशन महज एक छलावा है। कुछेक राज्यों को छोड़कर इस स्कीम के तहत दी जाने वाली राशि इतनी कम होती है कि बुजुर्गों के जीवन यापन की बात करना बेमानी साबित होगी। मात्र दो से चार सौ रुपए की मासिक पेंशन, कैसे किसी के जीवन को आर्थिक सुरक्षा प्रदान कर सकती है? माननीय उच्चतम न्यायालय ने बुजुर्गों के लिए पेंशन की व्यवस्था को भी खाद्य सुरक्षा से जुड़े अधिकारों का हिस्सा बनाने की बात कही थी लेकिन सरकार ने इस ओर कोई ठोस कदम नही उठाया। जब आर्थिक दृष्टि से भारत से कमजोर देश नेपाल, केन्या और दक्षिण अफ्रीका जैसे कई देश इस बाबत महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं तो भारत क्यों नहीं? दरअसल, भारत में राजनीतिक इक्छाशक्ति की कमी और युवाओं की बुजुर्गों के प्रति अवहेलना उनके जीवन को दुश्वार बनाती जा रही है।

उम्र के अंतिम पड़ाव में क्या करें बुजुर्ग-

-अनुभव के आधार पर अपनी उपयोगिता बढ़ानी होगी।

-परिवार के लिए उपयोगी और प्रोडक्टिव बनना होगा।

-मौजूदा हालात में स्थिति-परिस्थिति से समझौता करना होगा।

-शारीरिक सक्रियता लाने की जरुरत।

-आर्थिक सबलता के लिए उन्हें पार्ट टाइम जॉब या अन्य कार्यों पर खुद को संलग्न करना होगा इससे वे स्वस्थ भी बने रहेंगे।

-संयुक्त परिवार की अवधारणा को बनाए रखने की जरुरत।

सिर्फ कानून से बुजुर्गों की देखभल नहीं हो सकती है–

आंकड़े बताते हैं कि कोई भी कानून हमारे आदर, सम्मान और भावनात्मक रिश्तों की है क्योंकि हर व्यक्ति अपने जीवन में कभी न कभी बुजुर्ग जरुर होता है। इसके लिए सामाजिक और पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन जरुरी है। इसलिए सभी लोगों को अपनी सोच बदलनी होगी और जब सोच और नजरिया बदलेगा तभी बुजुर्गों का जीवन और समाज बदलेगा। चीन के मुकाबले भारत एक युवा देश है, लेकिन भारत को ये नहीं भूलना चाहिए की एक दिन भारत की युवा आबादी भी बूढ़ी होगी इसलिए अभी से ही हमें ऐसे समाज बनाने की जरुरत है जहां बुजुर्गों को उचित मान-सम्मान मिल सके और उन्हें अकेलेपन का एहसास न हो। उम्र और अनुभव असल में एक अत्तिरिक्त विशेषता ही होती है। नयी पीढ़ी को बुजुर्गों के अनुभव से सीख लेनी चाहिए। अंततः बुजुर्गों के होश और अनुभव तथा युवाओं के जोश के समन्वित रूप से ही देश तरक्की का मार्ग प्रशस्त करेगा। साथ ही 'हेल्दी एजिंग, फ्रेंडली एजिंग' की अवधारणा को विकसित करनी होगी। यह लेखक के अपने विचार हैं।

(लेखक न्यूट्रीशन सोसाइटी ऑफ इण्डिया भागलपुर चैप्टर के संयुक्त सचिव के साथ-साथ तिलकामांझी भागलपुर विश्व विद्यालय, भागलपुर में बीपीएससी से राजनीति विज्ञान विषय में सहायक प्रोफेसर के पद पर चयनित हुए हैं।)

डॉ0 दीपक कुमार दिनकर
सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार
सह संयुक्त सचिव, न्यूट्रीशन सोसाइटी ऑफ इण्डिया
भागलपुर चैप्टर
मोबाइल: 7979006089/9430027031
ईमेल: dinkar.deepak0@gmail.com

साम्प्रदायिकता

लेखक– अनिल कुमार शर्मा
विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान
बनारसी लाल सर्राफ वाणिज्य महाविद्यालय, नौगछिया
तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
मो0-9939266560

साम्प्रदायिक का अभिप्राय अपने धार्मिक सम्प्रदाय से भिन्न अन्य सम्प्रदाय या सम्प्रदाययों के प्रति उदासीन, घृणा, उपेक्षा, विरोधी या आक्रमण की भावना है जिसका आधार वास्तविक या काल्पनिक भय है इसमें एक सम्प्रदाय के लोग सोचते है की उनके सम्प्रदाय को अन्य सम्प्रदाय वाले नस्त कर रहे है या करने की कोशिश कर रहे हैं। इसमें अपने सम्प्रदाय के लोगों को जान-माल की क्षति अन्य सम्प्रदाय वाले से होने की आशंका करते हैं इसमें राजनीतिक एवं धार्मिक दोनों ही के कारण भिन्न सम्प्रदाय में झगरा होने की संभावना बनने के साथ ही साथ झगरा हो भी जाता है इससे बड़े पैमाने पर नरसंहार भी हो जाता है मुख्य रूप से धार्मिक कट्टरता, साम्प्रदायिकता को जन्म देती है इसमें एक धर्म वाले लोग अन्य धर्म को निम्न समझते है और अपने धर्म को उच्च समझते हैं।

एक धर्म वाले लोग जब दुसरे धर्म वाले लोगों से यह वास्तविक या काल्पनिक रूप से विश्वास करते है की उनके धर्म के विकास के मार्ग मई दूसरे धर्म वाले रोड़े बनकर विकास कार्य अवरुद्ध करेंगे तो साम्प्रदायिकता की भावना पनप जाती है जिस कारन व्यक्ति अपने अपने धर्म वाले को एक जुट बनाने का प्रयास करते है और अन्य धर्म के दोष को उजागर करते हैं इससे व्यक्ति उग्र होते हैं एवं सांप्रदायिक तनाव उत्पन्न होती है जो बढ़ते-बढ़ते हिंसक रूप धारण कर लेता है और विरोधी धर्म के व्यक्तियों के बीच हत्याएं, आगजनी आदि घटनाएं होने लगती है।

राजनेता अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए जाति या धर्म का सहारा लेते हैं। साम्प्रदायिकता में मुख्य रूप से दो सम्प्रदाय या धर्म या जाति का विवाद होता है जो नरसंहार का आधार बन जाता है भारतवर्ष में मुख्यतया दो सम्प्रदाय हिन्दू एवं मुस्लिम के बीच ही विवाद उत्पन्न होते रहा है जिस कारण बहुत दंगे हुए एवं धन-जन की क्षति हुई। जब सांप्रदायिक तनाव के कारण दंगे होते हैं तो सम्बंधित इलाके में आशांति के साथ–साथ आर्थिक दयनीयता भी आती है। हमें साम्प्रदायिकता की भावना को नियंत्रित करना चाहिए। प्रबुद्ध नागरिकों को चाहिए की जनजागरण लाकर साम्प्रदायिकता से होने वाली हानि से आम लोगों को समझाए। जनजागरण से साम्प्रदायिकता को भावना कुछ हद तक नियंत्रित हो सकती है। सरकार को भी साम्प्रदायिकता से सम्बन्धित दोषी पर कड़े दंड का शक्ति से पालन करना चाहिऐ किसी भी देश का विकास उस देश के शांति का समानुपाती होता है। राजनेता को धर्म या जाति आधार बनाकर राजनीति नहीं करना चाहिए। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी सांप्रदायिक तनाव के विरोधी रहे हैं। उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम धर्म वाले के बीच सौन्दर्य प्रेम को बढ़ावा का सदा आवाहन करते रहे हैं। देश को उन्नति के लिए हमें इस नारे को बुलंद करना होगा 'हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, हम हैं आपस में भाई-भाई।'

लेखक– अनिल कुमार शर्मा
मो0-9939266560

✚ ASHOK MEDICALS ✚
Allopathic/Ayurvedic Medicine
अंग्रेजी दवाखाना
Shop No.- F24, Lotus Square
Sheikhpur, Mehndi Tola, Lucknow

गांधी मार्ग से ही मानवता का कल्याण और देश का विकास संभव

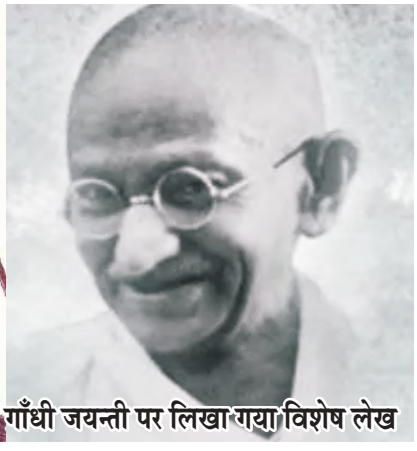

लेखक- डॉ0 दीपक कुमार दिनकर द्वारा गाँधी जयन्ती पर लिखा गया विशेष लेख

गाँधी के दर्शन का सर्वोदय समाज है। गाँधी का सर्वोदय समाज वर्ग संघर्ष से नही आता है बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता से आती है। देश में सामाजिक-आर्थिक विषमताएं काफी बढ़ गई है। जाति-पाति और धर्म-मजहब के नाम पर लोगों को बांटा जा रहा है। साम्प्रदायिक ताकतें हावी होती जा रही हैं। लिहाजा आज प्रजातान्त्रिक व्यवस्था का आधार ही कमजोर हो गया है। गाँवो की स्थिति कमजोर हो गयी है, खेती-किसानी से लोगों का मोहभंग होता जा रहा है। गाँधी के इस देश में किसान आत्महत्या करने को मजबूर हैं। देश के किसानों और मजदूरों की हालत अच्छी नहीं है। गाँधी ने कहा था कि यदि आप प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग करोगे तो इसका प्रभाव आने वाली पीढ़ी पर पड़ेगा। आज चारों ओर प्राकृतिक संसाधनों की लूट मची हुई है। भोग-विलासिता के नाम पर वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है, जंगलों से वन्य प्राणी लुप्त होते जा रहे हैं। छद्म विकास के नाम पर लोग गाँधी के सपनों को भूलते जा रहे हैं। गाँधीवादी मॉडल ही समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

गाँधी कोई साधारण व्यक्ति नहीं बल्कि एक महान विचार और विचाधारा हैं। गाँधी के विचारों को जन-जन तक ले जाने की जरुरत है। इसके लिए गाँधी को समझने से ज्यादा उनके विचारों को लोगों को अपने जीवन में उतारने की जरुरत है। शासन-प्रशासन भी गाँधीजी को महज कागजों पर ही सिमट कर रखते हैं। उनके जन्मदिन और पुण्यतिथि पर जुमलेबाजी और घोषणाएं बहुत होती है लेकिन वह भी सिर्फ कागजों पर ही। नीति-निर्माण में भी गाँधी के सपनों की अनदेखी हो रही है। लोग गाँधी को भूलते जा रहे हैं, उनके विचार आज सिर्फ किताबों तक ही सिमट कर रह गयी है। ऐसे में देश और मानवता का कल्याण संभव होता नहीं दिख रहा है। समाज में तेजी से संकीर्णतावादी सोच बढ़ रहे हैं। अमीर और गरीब के बीच की खाई दिनानुदिन बढती ही जा रही है। राष्ट्रपिता गाँधी को किसी खास जाति-धर्म में बांध कर नहीं देखा जा सकता है। गाँधी सर्वव्यापी हैं। गाँधी तो मानवतावादी सिद्धांत के परिचायक थे। गाँधी एक ऐसे धागे के सामान हैं जो आज इस जाति, धर्म, संप्रदाय, मजहब, क्षेत्र, भाषा आदि के नाम पर बिखरे व भटके हुए भारतीय समाज को फिर से एक सूत्र में पिरो सकते हैं। गाँधी ने अपने विचारों से मानव जाति को विकास की एक नयी दिशा प्रदान की। फलतः उनका प्रभाव आज भारत तक ही सीमित नहीं है वरन वे वैश्विक हो गए हैं। विश्व के अन्य देश भी अब गाँधीजी के विचारों के माध्यम से अपनी राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास करने लगे हैं तथा वे इस हेतु अहिंसा और सत्याग्रह की तकनीक को एक अधिक उचित एवं कारगर तकनीक समझने लगे हैं। वस्तुतः महापुरुष गाँधी के विचार सदियों तक जिन्दा रहेंगे। गाँधी के विचार आज देश-दुनिया और सभी कालों में प्रासंगिक हो गए हैं।

यह बिडम्बना ही है की आज गाँधी मार्ग पर कई अनैतिक कार्य हो रहे हैं। गाँधी जी का अपमान कागजी मुद्राओं के माध्यम से हो रहा है। सरकार जिस कागजी नोटों पर बापू की तस्वीर छाप कर उनको सम्मान दे रही है। 'बापू' की तस्वीर मुद्रित वही कागजी रुपये शराबखाने, वेश्यालयों, वधशालाओं से

लेकर चोर-डकैत और अपराधियों तक पहुँच रही है। चूँकि, गाँधी इन चीजों को महापाप मानते थे और लोगों को इससे दूर रहने की नसीहत देते थे। ऐसे में सरकार को नोटों पर गांधीजी की तस्वीर छापने पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। गाँधी जी का अपने ही देश में हो रहा यह अपमान असहनीय पीड़ा के समान है। मेरा व्यक्तिगत मत है की कम से कम गाँधीजी की तस्वीर वाली नोट सरकार नहीं छापे, क्योंकि गाँधी राष्ट्र के चरित्र हैं। वे लोगों के आदर्श हैं। जनमानस में उनकी प्रतिष्ठा है। आज समाज का नैतिक और चारित्रिक पतन हो गया है। गाँधी की जितनी प्रतिष्ठा विदेशों में है उतना अपने देश में नहीं हो रहा है। यह अत्यंत ही निंदनीय और सोचनीय विषय है। जब दुनिया गाँधी को मान रही है तो हम उन्हें क्यूँ भूलते जा रहे हैं। यह बिडम्बना ही है की जिस व्यक्ति ने अपने सिधान्तों से देश और दुनिया को अवगत कराया की भारत विश्व गुरु है। सत्य और अहिंसा के बल पर अंग्रेजों को भारत छोड़ने को मजबूर कर दिया। जिसने अपने उत्कृष्ट सोच से देश को नयी दिशा और दशा प्रदान की वही गाँधी आज अपने ही देश में उचित सम्मान पाने को लालायित हैं। आज हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं जिसमे राज्य का मुख्य लक्ष्य लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना है। ''सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय'' की तर्ज पर सभी लोगों का कल्याण करना ही एकमात्र ध्येय होनी चाहिए मगर दुर्भाग्य की बात है की जिस व्यक्ति (गाँधी) ने भारतीय समाज को एक नयी दिशा और उर्जा प्रदान की, उन्हें दरकिनार कर लोग अपने स्वार्थ सिद्धि में लगे हुए हैं।

आजादी के दशकों बाद भी लोग अपनी मातृभाषा को भूलते जा रहे हैं। मातृभाषा हिंदी को अपने ही देश में उचित तरजीह नहीं मिल पा रही है। लोग स्वराज और स्वदेशी की बात भी अंग्रेजी में ही कर रहे हैं। यहाँ तक की सरकार भी इस मसले पर गंभीर नहीं है। मातृभाषा या हिंदी पखवारा दिवस पर नेता और अधिकारी हिंदी में कामकाज करने का संकल्प लेते जरुर हैं मगर उन्हें मूर्त रूप नहीं दे पाते हैं। देश में मातृभाषा पर अंग्रेजियत हावी है। कार्यालय से लेकर पाठ्य पुस्तकों तक में हिंदी से ज्यादा अंग्रेजी को तरजीह दी जा रही है। निजी स्कूलों में अंग्रेजियत हावी है। यह सच है की समय की मांग और बदलते परिवेश में अंग्रेजी की जरुरत है लेकिन इसका कतई मतलब यह नहीं होना चाहिए की हम अपनी मातृभाषा को भूलकर विदेशी भाषा को ज्यादा तरजीह दें। गांधीजी भी यह मानते थे की ज्यादा अंग्रेजियत हमें फिर से गुलाम बना देगी। स्वाभाविकतः आज गाँधी का सपना अपने ही देश में कुंठित हो रहा है। गाँधी के सपने को जीवंत बनाये रखने के लिए मातृभाषा हिंदी को अधिकाधिक तवज्जो देने की जरुरत है। कार्यालय कार्य हिंदी में ही सम्पादित हो। साथ ही साथ स्वदेशी पोशाक और परिधान को भी बढ़ावा देने की जरुरत है। आज खादी और सूत से बने कपड़े की जगह लोग फैशनबल परिधान को प्राथमिकता दे रहे हैं। गाँधी का ड्रीम ग्राम स्वराज और स्वदेशी आज कराह रहा है। लघु और कुटीर उद्योग खत्म हो गए हैं। ग्लोबलायजेशन के इस दौर में उपभोक्तावादी संस्कृति हावी है। लोग चरखे और देशी सूत से बने कपड़े को पसंद नहीं कर रहे हैं। प्रधानमंत्री से लेकर राजनेता तक गाँधीजी के जन्मदिन और पुण्यतिथि पर राजघाट जाकर उन्हें नमन करते है वहीं दूसरी ओर योग दिवस पर चटाई चीन से मंगवाते हैं। स्वदेशी को बढ़ावा देना होगा। हमें इस मानसिकता से उबरना होगा तभी गाँधी के सपने साकार हो सकते हैं।

गाँधी की विचारधारा आज के परिपेक्ष्य में काफी उपयोगी और अनुकरणीय है। गाँधी के बताये मूलमंत्र से ही समस्याएं खत्म होगी और राष्ट्र प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकेगा। गाँधी का मानना था की जब गांव सुदृढ़ और विकसित हो जाये तो स्वतः देश आगे बढ़ जायेगा। गाँधीवाद से देश ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व का कल्याण संभव है क्यूंकि गाँधी सर्वव्यापी हैं। मानवता ही गाँधी का प्रतीक है। समाज में परिवर्तन गाँधी दर्शन से ही आ सकता है। आज गाँधी आचरण की नितांत अवश्यकता है। गाँधी के विचारों और मूल मंत्रों को गांव-गांव और जन-जन तक पहुँचाने के लिए सरकार को 'विकास मित्र' की जगह ''गाँधी मित्र'' को हर गांव और पंचायत स्तर पर बहाल करना चाहिए, ताकि ये ''गाँधीमित्र'' लोगों को बापू के विचारों के साथ-साथ स्वच्छता और जन जागरूकता से उन्हें अवगत करा सकें।

वर्तमान राष्ट्रीय परिदृश्य आज बहुत ही चिंतनीय है। स्वतंत्रता के दशकों बाद भी आम आदमी को रोटी, कपड़ा, शिक्षा, चिकित्सा और मकान जैसी मूलभुत सुविधाएं उपलब्ध नही है। समाजवाद महज एक छलावा बन कर रह गया है। बहुजन समाज का राजनैतिक अर्थ वर्ग विशेष को मान

लिया गया है। देश में सर्व शिक्षा अभियान का झूठा नारा दिया जा रहा है। गरीब और भी गरीब होते जा रहे हैं। अमीर और भी धनाढ्य होते जा रहे हैं। लिहाजा, अमीर और गरीब के बीच की खाई भी चौड़ी होती जा रही है। पूंजीपतियों का वर्चस्व लगातार बढ़ता जा रहा है। लिहाजा जनता की उपेक्षा करता यह तंत्र लोकतंत्र शब्द का उपहास करता सा प्रतीत होता है।

15 अगस्त 1947 को जब पूरा देश आजादी के जश्न में सराबोर था। राजधानी दिल्ली में रंगारंग समारोह आयोजित थे और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु 'नियति से साक्षात्कार' की बात कर रहे थे। उन्होने अपने भाषण में यह भी कहा था कि अब अपनी कसम पूरा करने का वक्त आ गया है। दरअसल, यह कसम प्रजातंत्र में सबों कि भागीदारी सुनिश्चित करने और दलितों, पिछड़ों, महिलाओं और अल्पसंख्यकों को सुरक्षा देने की थी। लेकिन, दुर्भाग्य से पंडित नेहरु और उनके बाद के प्रधानमंत्रियों द्वारा इस दिशा में किये गए प्रयास नाकाफी साबित हुए। प्रजातंत्र के रहनुमाओं की जनविरोधी नीति एवं भ्रस्त नियत के कारण जनता में प्रजातंत्र को लेकर 'असंतोष' एवं 'अविश्वास' लगातार बढ़ता ही जा रहा है। अधिकांश लोग यह मानने लगे हैं कि प्रजातान्त्रिक सरकारें अयोग्य एवं अक्षम होती हैं। कई लोग तो यहाँ तक जुमलेबाजी करते हैं कि वर्तमान प्रजातंत्र अंग्रेजों के शासन से भी गया-गुजरा है। वैसे कश्मीर एवं पूर्वोत्तर सहित पूरे देश में सफलतापूर्वक चुनाव संचालन को भारतीय प्रजातंत्र कि प्रौढ़ता का उदहारण माना जा सकता है। लेकिन घटता वोट का प्रतिशत प्रजातंत्र के प्रति जनता की उदासीनता एवं अविश्वास को उजागर करता है। फिर नक्सली एवं आतंकी संगठनों के चुनाव बहिष्कार कि घोषणाओं के इतर कई क्षेत्रों में आम मतदाता भी वोट का बहिष्कार करने को मजबूर होते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि वर्तमान प्रजातंत्र आम जनता कि अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पा रहा है। यह जनता को स्वतंत्रता, समानता, बंधुता और न्याय प्रदान करने में विफल रहा है। साथ ही इसके जरिये सबों के 'विकास' एवं 'सुशासन' के लक्ष्यों को भी पूरा नहीं किया जा सका है। आज आजादी के 70 वर्षों के बाद भी देश कि सत्तर फीसदी आबादी गरीबी रेखा के नीचे गुजर-बसर करने को मजबूर हैं। लगभग पचास फीसदी आबादी निरक्षर है। हजारों किसानों को आत्महत्या करनी पड़ी है। मजदूरों कि छटनी हो रही है। उन्हें सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्रों में काम से निकाला जा रहा है। नौकरियाँ खत्म की जा रही है। देश में आर्थिक मंदी छा गया है, अर्थव्यवस्था कराह रही है।

बेरोजगारी, भुखमरी, गरीबी और विषमता बढ़ती जा रही है। राजनीति में आपराधिकरण, भ्रष्टाचार, पूंजीवाद, जतिवाद, क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद, भाई-भतीजावाद और सिद्धांतहीनता का बोलबाला है। ऐसी विकट परिस्थिति में 'गाँधी' ही एकमात्र विकल्प हैं इसलिए वर्तमान प्रजातंत्र में गाँधी की प्रासंगिकता काफी बढ़ी है।

''प्रजातंत्र जनता का है'' यह परिभाषा भ्रमजाल में पड़कर हम प्रजातंत्र कि जो कल्पना करते हैं, उस कल्पना से वर्तमान प्रजातंत्र कि प्रकृति सर्वथा भिन्न है। वर्तमान प्रजातंत्र में 'प्रजा' निरीह एवं 'पंगु' है और तंत्र राजतन्त्र से भी ज्यादा 'निरंकुश' एवं 'पाखंडी' हो गया है। इतना ही नहीं बड़े पैमाने पर राजनेता, नौकरशाह और पूंजीपतियों व माफियाओं के बीच जनविरोधी गठजोड़ भी सामने आ रहा है। इसमें जनता की शक्ति को मात्र 'वोट' देने के औपचारिक अधिकार तक सीमित कर दिया गया है और इस अधिकार का भी कभी जाति एवं धर्म के नाम पर तो कभी लोभ एवं भय के सहारे अपहरण कर लिया जाता है। ऐसे में वर्तमान प्रजातंत्र को पूंजीतंत्र, सरकारी तंत्र, अल्पतन्त्र या प्रतिनिधितंत्र कहना ज्यादा उपयुक्त है।

स्पष्टतः वर्तमान प्रजातंत्र के व्यवहार गाँधी के राज्यविहीन अहिंसात्मक एवं विकेन्द्रीकृत 'ग्राम स्वराज' के आदर्शों से मेल नहीं खाते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने अपने सपनों के भारत के सम्बन्ध में कहा था कि- 'मैं एक ऐसे भारत के लिए प्रयास करूँगा, जिसमे गरीब से गरीब आदमियों को भी यह अनुभव हो कि यह देश उनका है और इसके निर्माण में उनकी कारगर भूमिका है। एक ऐसा भारत जिसमे सभी समुदाय पूर्ण मैत्रीभाव के साथ रहेंगे। ऐसे भारत में छुआछूत के अभिशाप अथवा मादक द्रव्यों के अभिशाप के लिए कोई स्थान नहीं होगा। स्त्रियों को भी पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त होंगे, मेरे सपनों का भारत यही है।'

मौजूदा लोकतंत्र में कई तरह कि बुराइयाँ हैं और इस आधार पर कुछ लोग प्रजातंत्र को ही नकारने कि बात करने लगे हैं। लेकिन, ऐसा करना आत्मघाती होगा, क्यूंकि प्रजातंत्र ने

जनता को कई तरह कि शक्तियां दी हैं जो कि राजतन्त्र और तानाशाही व्यवस्था में संभव नहीं है। फिर प्रजातंत्र में निरंतर सुधार कि गुंजाईश भी है। साथ ही एक अहम बात यह है कि अभी प्रचलित लोकतंत्र सही अर्थों में लोकतंत्र है ही नहीं। इसलिए हमें वर्तमान लोकतंत्र कि कमियों एवं खामियों को दूर कर सच्चे लोकतंत्र को शासन के साथ-साथ समाज एवं आम जीवन में भी अंगीकार करने कि जरुरत है। इस दिशा में हमें गाँधी के कार्यों और विचारों से प्रेरणा मिल सकती है।

वर्तमान प्रजातंत्र में हर ओर अनैतिकता का बोलबाला है। आज राजनीति का एकमात्र लक्ष्य येन-केन प्रकारेण सत्ता पाना है। वोट के लिए पैसा बांटने से लेकर साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने तक से हमारे नेता परहेज नहीं करते हैं। जनता भी जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा आदि के आधार पर वोट करती है और लोभ-लालच में पड़कर अपना वोट बेचने से भी परहेज नहीं करती है। फिर हमारे चुने हुए प्रतिनिधिगण (वार्ड पार्षद से लेकर संसद तक) भी अपने वोट का सौदा करते हैं। सरकार बनाने और गिराने के लिए भी पैसों का खुलेआम लेन-देन होता है। सूरा-सुंदरियाँ भी इसमें अहम भूमिका निभाती हैं। हालत यह है कि संसद में प्रश्न पूछने के लिए भी रिश्वत ली जाती है। देश के हालात ऐसे हैं की आज गाँधी के हत्यारे की पूजा और महिमामंडन कुछ तथाकथित विचारधारा के राजनीतिक दल के द्वारा किया जा रहा है।

हम जानते हैं कि सक्रिय राजनीति में रहते हुए भी गाँधी ने कभी भी नैतिकता का दामन नहीं छोड़ा। जाहिर है कि गाँधी राजनीति का आध्यात्मीकरण करना चाहते थे और प्रजातंत्र में नैतिकता का समावेश करने के लिए यह आवश्यक भी है। ऐसे में वर्तमान प्रजातंत्र को नैतिक बनाने के लिए गाँधी के आदर्शों से प्रेरणा लेने की जरुरत है। सुखद पहलू यह है की आज देश राष्ट्रपिता गाँधी जी की 150वीं जयंती समारोह मना रहा है।

अंततः हमें गाँधी के जीवन दर्शन से सीख लेने की जरुरत है। लोगों का दायित्व बनता है कि वे गाँधी के विचारों को जीवंत बनाये रखें तभी हमारा देश और मानवता जिन्दा रहेगा। इसके लिए गाँधीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व से सीख लेनी होगी और उनके विचारों का अनुसरण करना होगा। गाँधी का खुद मानना था कि ''गाँधी मर सकता है लेकिन गांधीवाद हमेशा जीवित रहेगा।'' यह लेखक के ये अपने विचार हैं।

(लेखक गाँधीवादी विचारक के साथ-साथ तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर में राजनीति विज्ञान विषय में बीपीएससी से सहायक प्रोफेसर के पद पर चयनित हुए हैं।)

-डॉ0 दीपक कुमार दिनकर

शंकर आयुर्वेद ट्रस्ट द्वारा संचालित

आरोग्यम् आयुर्वेद

(आरोग्यम् कायाकल्प आश्रम की शाखा)

योग, आयुर्वेद व प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान अब आपके शहर जीन्द में

40 वर्षों के अनुभवी वैद्य नाड़ी देखकर बीमारी का ईलाज करते हैं।

गठिया बाय, शूगर, दमा/साँस सम्बन्धि रोगों

पुराना नजला/जुकाम, पीलिया, हृदय रोग, घुटनों का दर्द, पथरी, एसीडिटी, जोड़ों के दर्द, बदन दर्द / कमर दर्द, माईग्रेन, सर्वाइकल, मोटापा, चर्म रोग (एलर्जी), बवासीर, एसीडीटी, अधरंग, लीवर सम्बन्धी रोग, सूखी/काली खांसी, बन्द नसों की समस्या, गुप्त रोग (स्त्री/पुरूष) आदि बीमारियों का सफल इलाज आयुर्वेदिक दवाईयों, जल चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा, मृदा चिकित्सा, पंचकर्म, शिरोधारा, जलनेति, तेलनेति/घृतनेति, मिट्टी पट्टी, सम्पूर्ण शरीर लेप, कायाकल्प थैरेपी, बॉड़ी इम्यूनाईजेशन, भाँप(स्टीम) स्नान, आंत स्नान, रीढ़ स्नान, बालू रेत स्नान के द्वारा किया जाता है।

सभी जगह से निराश रोगी एक बार अवश्य मिलें।

नोट : योग प्राकृतिक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर विधि और आयुर्वेदिक दवाईयों से अनुभवी चिकित्सकों के द्वारा रोगों का जड़ से ईलाज किया जाता है तथा मशीनों द्वारा घुटनों की सिकाई की जाती है।

हैबतपुर रोड़, सैक्टर 9 के सामने, जीन्द - हरियाणा

09896515771, 07400074084

राहुल कुमार विश्वकर्मा के शोध को मिला पेटेन्ट

गढ़वाल। हेमवती नन्दन बहुगुणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय गढ़वाल को अश्वगंधा के बीज से निर्मित हर्बल दवा पर पेटेंट मिला है जिससे लिपिड प्रोफाइल और मोटापे के प्रबंधन में मदद मिलेगी। डॉ0 अजय सेमलटी, राहुल कुमार डॉ0 मोना सेमलटी द्वारा किये गये शोध को यह पेटेन्ट मिला है। शोधकताओं का यह शोध गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय के लिए भी उपलब्धि है। पेटेन्ट मिलने से विश्वविद्यालय के शिक्षकों व शोध छात्रों में खुशी का माहौल है।

मोटापे को कम करने की हर्बल दवा का पेटेन्ट गढ़वाल विश्वविद्यालय के एम0फार्मा के छात्र के लघु शोध पर यह पेटेन्ट विश्वविद्यालय को 20 वर्षों के लिए मिला है। भारत सरकार के पेटेन्ट कार्यालय से पेटेन्ट प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया है। गढ़वाल विश्वविद्यालय के फार्मास्यूटिकल विभाग में तैनात असिस्टेंट प्रोफेसर अजय सिंह ने बताया कि एम0फार्मा के छात्र राहुल कुमार विश्वकर्मा के लघु शोध पर विश्वविद्यालय को मोटापा कम करने की हर्बल दवा के शोध व निर्माण का पेटेन्ट मिला है।

राहुल कुमार वर्तमान में कर्नाटक एंटीबायोटिक्स एण्ड फार्मास्यूटिकल लिमिटेड (भारत सरकार का उद्यम) धाखाड़, कर्नाटक में कार्यकारी अधिकारी उत्पादन के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने इससे पहले इंडियन मेडिसिन फार्मास्यूटिकल कार्पोरेशन लिमिटेड (भारत सरकार का उद्यम) मोहान, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड में सहायक प्रबंधक उत्पादन के रूप में कार्य किया है। यह शोध चुनौतीपूर्ण था क्योंकि फामाकोग्रांसी, फार्मास्यूटिकल केमिस्ट्री, फार्मास्यूटिक्स और फामाकोलाजी के अनुप्रयोगों के साथ व्यावहारिक दृष्टिकोण में लाया गया था। उन्होंने कहा कि यह काम अनोखा है क्योंकि एकल पौधे के हिस्से में एंटी–हाइपरलिपिडिमिया और मोटापारोधी गतिविधि देखी गई है।

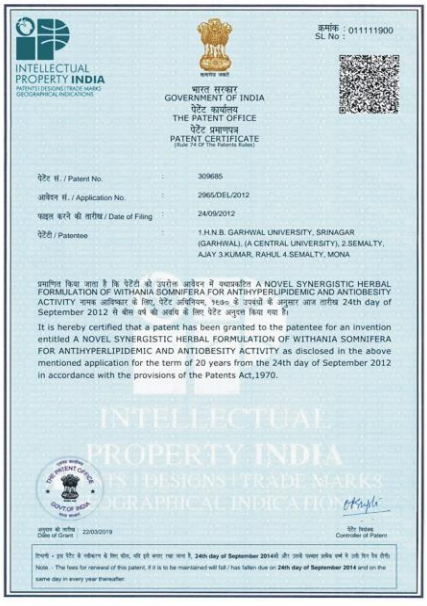

डॉ0 अजय सेमलटी

डॉ0 मोना सेमलटी

राहुल कुमार विश्वकर्मा

INTELLECTUAL PROPERTY INDIA
PATENTS | DESIGNS | TRADE MARKS
GEOGRAPHICAL INDICATIONS

क्रमांक : 011111900
SL No :

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
पेटेंट कार्यालय
THE PATENT OFFICE
पेटेंट प्रमाणपत्र
PATENT CERTIFICATE
(Rule 74 Of The Patents Rules)

पेटेंट सं. / Patent No. : 309685

आवेदन सं. / Application No. : 2965/DEL/2012

फाइल करने की तारीख / Date of Filing : 24/09/2012

पेटेंटी / Patentee : 1.H.N.B. GARHWAL UNIVERSITY, SRINAGAR (GARHWAL), (A CENTRAL UNIVERSITY), 2.SEMALTY, AJAY 3.KUMAR, RAHUL 4.SEMALTY, MONA

प्रमाणित किया जाता है कि पेटेंटी को उपरोक्त आवेदन में यथाप्रकटित A NOVEL SYNERGISTIC HERBAL FORMULATION OF WITHANIA SOMNIFERA FOR ANTIHYPERLIPIDEMIC AND ANTIOBESITY ACTIVITY नामक आविष्कार के लिए, पेटेंट अधिनियम, १९७० के उपबंधों के अनुसार आज तारीख 24th day of September 2012 से बीस वर्ष की अवधि के लिए पेटेंट अनुदत्त किया गया है।

It is hereby certified that a patent has been granted to the patentee for an invention entitled A NOVEL SYNERGISTIC HERBAL FORMULATION OF WITHANIA SOMNIFERA FOR ANTIHYPERLIPIDEMIC AND ANTIOBESITY ACTIVITY as disclosed in the above mentioned application for the term of 20 years from the 24th day of September 2012 in accordance with the provisions of the Patents Act,1970.

अनुदान की तारीख
Date of Grant : 22/03/2019

पेटेंट नियंत्रक
Controller of Patent

Note. - The fees for renewal of this patent, if it is to be maintained will fall / has fallen due on 24th day of September 2014 and on the same day in every year thereafter.

शोधकर्ता ने उक्त फारमेशन के पेटेन्ट के लिए भारतीय पेटेन्ट अधिनियम–1970 के अनुसार 24 सितम्बर 2012 को भारतीय पेटेन्ट कार्यालय दिल्ली में गोपाल कुमार नायक एसोसिएट्स के माध्यम से आवेदन किया गया था। भारतीय पेटेन्ट कार्यालय ने शोध को 18 अप्रैल 2014 में भारतीय पेटेन्ट पत्रिका में प्रकाशित किया। सभी औपचारिकता पूर्ण करने के बाद भारत सरकार के पेटेन्ट कार्यालय की ओर से 22 मार्च 2019 को प्रमाण पत्र जारी किया गया। उक्त पेटेन्ट डॉ0 अजय सेमलटी, राहुल कुमार और डॉ0 मोना सेमलटी के नाम जारी किया गया है।

अपने अधिकारों और विकास के प्रति सजग हो रहीं तांबट समुदाय की महिलाएं

रिपोर्ट– भारत रेघाटे (ताम्रकार) पुणे

पुणे। महंगाई की वजह से बेहाल हुआ समाज, घर में किसी को नौकरी नहीं, पारम्परिक व्यवसाय चरमरा गया पारिवारिक जीवन असहनीय और कमजोर हो रहा इसलिए तांबट समुदाय की महिलाओं ने सरकार के खिलाफ गहरा रोष व्यक्त किया। चुनाव के दौरान वादे किये जाते हैं लेकिन इसे लागू नहीं किया जाता। समाज की मांगों को स्वीकार करने के लिए सरकार को मजबूर करेंगे, जरूरत पड़ी तो आन्दोलन करेंगे, संसद का घेराव करेंगे, ऐसी तांबट समुदाय की महिलाओं ने चेतावनी दी है। तांबट समुदाय की महिलाएं अपने घरों में जागरूकता पैदा करके समाज मे परिवर्तन के लिए काम कर रही हैं। तांबट समाज एकजुट विश्वकर्मा समुदाय की धारा का घटक है। शासन स्तर पर पांचो समाज को श्रेणियों में विभाजित किया गया है, लौहकार और शिल्पकार एनटी मे हैं, जबकि काष्ठकार, ताम्रकार और स्वर्णकार ओबीसी श्रेणी में हैं। तांबट समाज एक अल्पसंख्यक समुदाय है और विकास से कोसों दूर है।

यह समाज जो आर्थिक रूप से हाथ के कामों पर निर्भर है, बदलती तकनीक में भी अपने व्यवसाय को मजबूत बनाकर जीवन यापन कर रहा है। कुल आबादी की तुलना में सरकारी नौकरी में इस समूह की प्राथमिकता पर विचार करना महत्वपूर्ण है, ऐसा रजनी पाथरकर ने कहा। सरकारी योजनाओं की जानकारी समुदाय तक नहीं पहुंचती ऐसा प्रियंका म्हालणकर ने कहा। समुदाय को घरकुल जैसी योजना की सख्त जरूरत है, ऐशी मांग मीनल नगरकर, साक्षी मिस्किन, व अश्विनी तलेकर ने की। समुदाय के शिक्षित बेरोजगार नौकरी और व्यवसाय के लिए भटक रहे हैं। आज, युवा सीखने के लिए बाहर आ रहे हैं, लेकिन उन्हें सही दिशा देने की आवश्यकता है ऐसा प्रभावती आप्रे ने कहा। एकेला आदमी के साथ अपार मुद्रास्फीति, ने इसे घरबस्ती को चलाने के लिए एक कसरत बना दिया है। समाज में विकास स्थापित होने के लिऐ व्यवसाय शुरू करने के लिऐ सरकार को आर्थिक सहायता करनी चाहिए ऐसा अमृता आप्रे ने कहा।

सरकार को समस्याओं का हल निकालना चाहिए, नारी शक्ति का सम्मान व उनकी राय का सम्मान करना सरकार का कर्तव्य बनता है। घर की समस्या का हल निकालेगा तभी समाज आत्म-पहचान बना पायेगा। जिस पार्टी ने समाज की मांगो का समर्थन किया है समाज उसी पार्टी को वोटिंग करेगा। वैदिक परम्परा का पालन करने वाला तांबट समाज वोट का मूल्य जानता है। वोटिंग का बहिष्कार करना बुद्धिमान लोगों का लक्षण नहीं है। समाज की महिलाओं ने अपना विचार व्यक्त किया कि यदि सरकार समाज के प्रश्न को अनदेखा करती है, तो समाज सरकार को मजबूर करेगा इसलिए समाज की महिला अपने बच्चों को प्रेरित कर रही हैं।

इस अवसर पर विमल रेघाटे, सुनंदा म्हालणकर, सुमन नगरकर, गीता म्हालणकर, नंदा गोमासे, मनीषा म्हालणकर, वैजयंती रेघाटे, शुभांगी नगरकर, सुमन आप्रे, अनसूया मिस्किन, रश्मी म्हालणकर, सुनिता आप्रे, शुभांगी पाथरकर, मीना दस्तुरकर, सोनाली म्हालणकर आदि महिला उपस्थित थी।

विश्वकर्मा जांगिड़ कर्मचारी समिति ने किया पोस्टर विमोचन

जोधपुर। श्री विश्वकर्मा जांगिड़ कर्मचारी समिति जोधपुर के तत्वावधान में जांगिड़ युवक-युवती परिचय सम्मलेन का आयोजन 29 दिसम्बर को होना सुनिश्चित हुआ है। इस सम्बन्ध में अरिहंत नगर स्थित छात्रावास में बैनर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर संयोजक कमेटी के जे0पी0 शर्मा, हजारीलाल जांगिड़, चम्पालाल शर्मा, चम्पालाल जांगिड़, महिला संयोजक मीना शर्मा व मंजुलता शर्मा, समिति के अध्यक्ष रामदीन शर्मा, सचिव जसराज सुथार, कोषाध्यक्ष ऊदाराम सुथार, वरिष्ठ उपाध्यक्ष आशाराम शर्मा, उपाध्यक्ष खेताराम सुथार, महिला उपाध्यक्ष इन्दु शर्मा, सलाहकार चन्द्रशेखर शर्मा तथा जांगिड़ वर-वधु सूचना के एडमिन पूरणमल शर्मा, विश्वकर्मा सुथार समाज सेवा समिति के अध्यक्ष मानाराम सुथार तथा गेमाराम सुथार उपस्थित थे। अध्यक्ष रामदीन शर्मा ने बताया कि परिचय सम्मलेन हेतु 15 दिसम्बर 2019 तक युवक-युवती अपना आवेदन फार्म समिति में जमा करा देवें। आवेदनकर्ता 29 दिसम्बर 2019 को प्रातः 10 बजे कार्यक्रम स्थल पर अभिभावक के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज करायेंगे। कार्यक्रम के पश्चात प्राप्त आवेदन फार्म से युवक-युवती परिचय की एक पुस्तिका का प्रकाशन किया जायेगा।

विश्वकर्मा समाज प्रतापगढ़ जिले में आयोजित करेगा सामूहिक विवाह सम्मेलन

प्रतापगढ़। जिले का विश्वकर्मा समाज आगामी वर्ष अप्रैल २०२० में सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन करेगा। सामूहिक विवाह सम्मेलन की तैयारी के लिये एक बैठक उत्सव वाटिका मानिकपुर में विश्वकर्मा समाज के कुछ प्रतिष्ठित एवं सम्मानित लोगों के साथ सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता राजकुमार विश्वकर्मा ने की।

बैठक में अप्रैल २०२० में होने वाले सामूहिक विवाह की तैयारी एवं उसे सफल बनाने के लिए एक आयोजन समिति का गठन किया गया। समिति में मुख्य संरक्षक भगवान विश्वकर्मा, संरक्षक रामप्रसाद विश्वकर्मा (प्रधान सराय मेदी मांधाता), विनोद गुरुजी (प्रधान गोमती), अध्यक्ष रामपाल विश्वकर्मा (पूर्व डीएसओ), उपाध्यक्ष शांति प्रकाश विश्वकर्मा (बीडीओ मांधाता), आचार्य शिवनारायण विश्वकर्मा (पूर्व प्रधानाचार्य एवं अध्यक्ष विश्वकर्मा मंदिर श्रृंगबेरपुर) को जिम्मेदारी दी गई है। सामूहिक विवाह सम्मेलन के मुख्य आयोजक राजकुमार विश्वकर्मा (जिलाध्यक्ष विश्वकर्मा विकास एवं सुरक्षा समिति, प्रतापगढ़) हैं। विवाह सम्मेलन को सफल बनाने के लिये गांव और क्षेत्र की जिम्मेदारी भी कई लोगों को प्रदान की गई है।

अधिकारों के लिये अपनाना होगा संघर्ष का मार्ग– डॉ0 सत्यानन्द शर्मा

औरंगाबाद। बिहार लोहार अनुसूचित जनजाति जागृति मंच द्वारा बीते 20 सितम्बर को दाउदनगर प्रखंड में विश्वकर्मा सम्मेलन आयोजित किया गया। ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य समाज को संगठित कर राजनीति में भागीदारी सुनिश्चित करना है। जाति नहीं जमात की ओर चलें, सत्ता पर काबिज होने के लिए आगे बढ़े, यह बातें लोक जनशक्ति पार्टी सेकुलर के संस्थापक डॉ0 सत्यानन्द शर्मा ने विश्वकर्मा सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा। उन्होंने कहा कि गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा का शिकार इस समाज को अधिकारों से वंचित रखा है। इसे दूर करने के लिए समाज को आगे आना होगा और संघर्ष करना होगा। कहा कि हम सभी को अपने अधिकार के लिये लड़ाई खुद लड़ना पड़ेगा, कोई दूसरा कोई लड़ने वाला नहीं है। जब तक हमें हमारा अधिकार नहीं मिलेगा विकास सम्भव नहीं है।

डॉ0 शर्मा ने कहा कि मन से डर निकले और कुछ बनने वाली प्रवृत्ति को लेकर बाहर निकलें तभी आप बहुत कुछ कर सकते हैं। ईश्वर ने आप लोगों को समर्थ बनाया है आप संकल्प लें कि हम आज से सरकार बदलने का अभियान चलाएंगे और समाज को जमात की ओर ले जाने का संकल्पित मार्ग अख्तियार करेंगे। उन्होंने कहा कि जब तक समाज में राजनीतिक चेतना नहीं होगी तब तक समाज विकास से दूर ही रहेगा। विकास की मुख्य धारा में आने के लिए संघर्ष का रास्ता ही एकमात्र विकल्प है।

विश्वकर्मा सम्मेलन को पप्पू विश्वकर्मा, गणेश शर्मा, पारस विश्वकर्मा, दिलीप शर्मा, रमेश शर्मा, रामसलोक शर्मा, रामबदन शर्मा, डॉ0 धर्मेंद्र विश्वकर्मा, अर्जुन शर्मा, विमल विश्वकर्मा आदि लागों ने सम्बोधित किया। इस सम्मेलन में सैकड़ों विश्वकर्मा समाज के लोग बढ़ चढ़ कर भागीदारी जिम्मेदारी पूर्वक निभाते हुये सफल बनाया।

www.richinternational.in
Rich INTERNATIONAL
MUSIC
Office:. 022 26681888
Helpline:. +91 9323004818
E-mail:. richinternational.in@gmail.com
Station...

बापू की कहानी

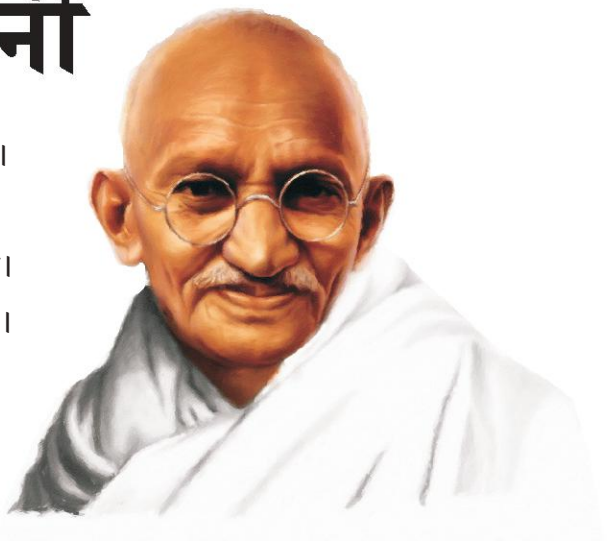

आओ बच्चों तुम्हे मोहनदास की कहानी सुनाती हूँ।
कैसे बने वो राष्ट्रपिता मं तुम्हे आज बतलाती हूँ।।
2 अक्टूबर 1869 को करमचन्द के घर जन्म लिया।
पुतली बाई माँ के प्यारे मोहनदास उनको नाम मिला।।
वैष्णव संप्रदाय के थे अनुयायी।
राजकोट में प्रारंभिक शिक्षा पाई।।
तेरह साल की उम्र में विवाह बंधन में बंधे बेचारे।
कस्तूरबा थी महान नारी पत्नी रूप में जो स्वीकारी।।
लन्दन विश्वविद्यालय से वकालत की शिक्षा प्राप्त की।
बने बैरिस्टर और दक्षिण अफ्रीका में नौकरी की।।
1917 में चंपारण में आंदोलन आरम्भ किया।
नील की खेती के खिलाफ उनका यह पहला आंदोलन हुआ।।
1 अगस्त 1920 को असहयोग आंदोलन की शुरूआत की।
अंग्रेजों के खिलाफ भारत के असहयोग की पहली शुरूआत थी।।
नमक सत्याग्रह करके 1930 में दांडी यात्रा निकाली थी।
दांडी में नमक बनाकर अंग्रेजों को नीचा दिखाने की ठानी थी।।
दलित आंदोलन शुरू कर खुद दलितों की सेवा में सौप दिया।
1932 में भारतीय छुआ छूत विरोधी लीग का आगाज किया।।
भारत छोड़ो आंदोलन 1942 में गांधी जी ने शुरू किया।
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी सत्र में अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा दिया।।
खादी को सम्मान दिलाया स्वदेशी का नारा देकर।
अपने हाथ से सूत बनाया गांधी जी ने चरखा कातकर।।
बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत कहो, गांधी जी के तीन मन्त्र थे।
किया हिंसा का त्याग अहिंसा के अनुयायी बने थे।।
गांधी जी की विचारधारा ने सर्वभारत को एक किया ।
बिना लाठी बिना बन्दूक एकता की शक्ति से देश आजाद हुआ।।
यही थे मोहन दास करमचन्द गांधी जो बाद में बापू कहलाये।
अपने स्वतंत्रता के प्रति योगदानों से राष्ट्रपिता की उपाधि पाये।।

लेखिका–
सुनीला देवी जांगिड़

मेकिंग द डिफरेंस फाउण्डेशन ने किया रक्तदान शिविर का आयोजन

मुम्बई। मीरा रोड, मुम्बई की स्थानीय संस्था 'मेकिंग द डिफरेंस फाउण्डेशन' द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन 13 अक्टूबर को किया गया। मीरा रोड के स्थानीय बहुचर्चित समाजसेवक व पत्रकार राकेश विश्वकर्मा ने लाल फीता काटकर रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया। आयोजकों द्वारा श्री विश्वकर्मा को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात सभी पंजीकृत रक्तदान करने वाले सदस्यों द्वारा क्रमानुसार रक्त दिया गया।

इस रक्तदान शिविर को सफलतापूर्वक आयोजन व सम्पन्न करने के लिए 'मेकिंग द डिफरेंस फाउंडेशन' के अध्यक्ष मीत विश्वकर्मा, हर्षित झोलापरा, हीरा विश्वकर्मा, विकास विश्वकर्मा, संदीप विश्वकर्मा, रंजीत विश्वकर्मा, द्विती मेहता, हितेश प्रजापति, मंजुषा श्रेष्ठ, पारस विश्वकर्मा, मयूर सुरती, चेतन सुथार, अनिल विश्वकर्मा, अनिल विजय विश्वकर्मा, रोहित स्वामी, राकेश विश्वकर्मा, आईवन डी सुजा, वत्सल वडेचा तथा संस्था के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संस्था अध्यक्ष मीत विश्वकर्मा ने सभी पदाधिकारियों व रक्तदाताओं के प्रति आभार प्रकट करते हुये कहा कि एकत्रित रक्त किसी के जीवन को बचाने में महत्वपूर्ण होगा।

-विशेष अनुरोध-

प्रिय बन्धुओं, सादर विश्वकर्माभिवादन!

आप सभी जानते हैं कि ''**विश्वकर्मा किरण**'' हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशन के 20वें वर्ष में चल रही है, जो समाज के अधिकांश समाचारों, विचारों और लेखों के साथ आप सभी के बीच एक पहचान बना चुकी है। पत्रिका ने समाज के हर छोटे-बड़े समाचारों, लेखकों के विचार, समाज के कवियों और साहित्यकारों को तवज्जो दिया है। अधिकांश पाठक और शुभचिन्तक यह अच्छी तरह जानते हैं कि समाचारपत्र अथवा पत्रिका प्रकाशन का कार्य बहुत ही कठिन है। प्रकाशन में बहुत खर्च आता है जिसका संकलन बहुत ही कठिनाई से हो पाता है, इन्हीं परिस्थितियों में कभी-कभार प्रकाशन बाधित भी हो जाता है। प्रकाशन बिना आप सभी के सहयोग के नहीं चल सकता। आप सभी से अनुरोध है कि सदस्यता के अलावा भी समय-समय पर यथासम्भव पत्रिका का आर्थिक सहयोग करते रहें जिससे प्रकाशन निर्बाध रूप से चलता रहे।

सहयोग राशि इस खाते में जमा करें-

Account Name	:	VISHWAKARMA KIRAN
Account No.	:	4504002100003269
Bank Name	:	PUNJAB NATIONAL BANK
Branch	:	SHAHGANJ, JAUNPUR (U.P.)
IFSC Code	:	PUNB0450400

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

राजेश विश्वकर्मा
राष्ट्रीय महासचिव
मो0- 9415660042

शिवकुमार विश्वकर्मा
जिला अध्यक्ष विश्वकर्मा ब्रिगेड, जौनपुर
मो0- 9919267196

डा0 जगदीश विश्वकर्मा
जिला महासचिव, जौनपुर
मो0- 9415653489

अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा

दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएं

टी0डी0 शर्मा
प्रभागीय निदेशक
सामाजिक वानिकी वन प्रभाग
जनपद-रायबरेली

दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएं

राम नरेश शर्मा
निजी सचिव
उ0प्र0 सचिवालय, लखनऊ
मो0: 9454410326

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

इं0 सतीश चन्द्र
अधिशासी अभियन्ता
उ0प्र0 पावर कार्पोरेशन लि0
जनपद- गोरखपुर
मो0: 9919042645

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रभुनाथ विश्वकर्मा
उद्यमी एवं समाजसेवी
श्री श्याम ट्रेडिंग कम्पनी
मालवीय रोड, देवरिया
मो0: 9696949400

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

धर्मेन्द्र विश्वकर्मा
वरिष्ठ निरीक्षक
विधिक माप विज्ञान (बाट-माप)
लहुराबीर, वाराणसी
मो0: 9453548657

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

ट्रैक्टर से चलित धान कूटने की आटो मैटिक मशीन

गाँव - गाँव घर - घर जा कर करे कुटाई

हॉफ डाला साईक्लोन मॉडल

भूसी टैंक मॉडल

हॉफ डाला मॉडल

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त, खादी ग्रामोद्योग आयोग से प्रमाणित
यू.पी.एग्रो द्वारा मान्यता प्राप्त सर्वश्रेष्ठ उत्पादन, खादी ग्रामोद्योग बोर्ड
व उद्योग विभाग द्वारा 25 से 35% तक अनुदान प्राप्त करें।

विश्वकर्मा फाउन्ड्री वर्क्स मो0 9415139283

एन.टी.पी.सी. रोड कश्मिरिया चौराहा, टाण्डा-अम्बेडकर नगर (उ०प्र०)

Shreya Associates
www.shreyaassociates.com

* डिजाइनिंग
* ड्राइंग (नक्शा)
* इस्टीमेट
* वैल्युवेशन

सभी सिविल कन्स्ट्रक्शन वर्क
एक्सटीरियर व इन्टीरियर डिजाइन के साथ
एडवाइजर एडवोकेट्स

श्रेया एसोसिएट्स
धावा स्टेट, निकट मटियारी, लखनऊ-226028
Call: 9628545000 Whatsapp: 7897060124
E-mail: info@shreyaassociates.com
shreyaassociates913@gmail.com

सुमन मोटर्स

TATA MOTORS

सेल एण्ड सर्विस

टाटा मोटर्स के नये कार्मशियल एवं पैसेंजर कार के लिए सम्पर्क करें।
काई भी पुराना वाहन लायें टाटा मोटर्स का नया वाहन घर ले जायें।

जनप्रतिनिधि एवं सरकारी कर्मचारी/अधिकारी एवं किसान व्यापारी अन्य समस्त लोगों को विशेष सुविधाएं
बीमा सुविधा, फाईनेन्स सुविधा (बैंक द्वारा/टाटा मोटर्स द्वारा/अन्य प्राईवेट फाइनेन्स) के लिए सम्पर्क करें।

सुमन मोटर्स – एन.एच.–24, कचूरा महोली, जनपद – सीतापुर (उ.प्र.)

मोब. 9415574025, 9454669657, 9839678555, 9838334430

विश्वकर्मा किरण हिन्दी साप्ताहिक
R.N.I. No.- UPHIN/2000/01157
जौनपुर, 28 अक्टूबर, 2019